माता सुंदरी कॉलेज फॉर विमेन
नॉन कॉलेजिएट फॉर विमेन एजुकेशन बोर्ड केंद्र

अपराजिता

वार्षिक-पत्रिका

अंक 6 (2021-22)

MATA SUNDRI COLLEGE FOR WOMEN
NCWEB STUDY CENTRE
Mata Sundri Lane, New Delhi – 110002

ਕਾਲਜ ਪ੍ਰਾਰਥਨਾ

ਦੇਹ ਸਿਵਾ ਬਰੁ ਮੋਹਿ ਇਹੈ ਸੁਭ ਕਰਮਨ ਤੇ ਕਬਹੂੰ ਨ ਟਰੋਂ॥
ਨ ਡਰੋਂ ਅਰਿ ਸੋ ਜਬ ਜਾਇ ਲਰੋਂ ਨਿਸਚੈ ਕਰਿ ਅਪੁਨੀ ਜੀਤ ਕਰੋਂ॥
ਅਰੁ ਸਿਖ ਹੌਂ ਆਪਨੇ ਹੀ ਮਨ ਕੌ ਇਹ ਲਾਲਚ ਹਉ ਗੁਨ ਤਉ ਉਚਰੋਂ॥
ਜਬ ਆਵ ਕੀ ਅਉਧ ਨਿਦਾਨ ਬਨੈ ਅਤਿ ਹੀ ਰਨ ਮੈ ਤਬ ਜੂਝ ਮਰੋਂ॥

- ਗੁਰੂ ਗੋਬਿੰਦ ਸਿੰਘ ਜੀ, ਦਸਮ ਗ੍ਰੰਥ, ਪੰਨਾ ਨੰ.99

महाविद्यालय प्रार्थना

देह सिवा बर मोहि इहै सुभ करमन ते कबहूं न टरों॥
न डरों अरि सो जब जाइ लरों निसचै करि अपुनी जीत करों॥
अरु सिख हों आपने ही मन कौ इह लालच हउ गुन तउ उचरों॥
जब आव की अउध निदान बनै अति ही रन मै तब जूझ मरों॥

- गुरु गोबिंद सिंह जी, दसम ग्रंथ, पृष्ठ संख्या 99

College Prayer

Grant me just this boon, O Sovereign Lord!
May I never shirk from doing righteous deeds;
May I fight, without flinching, all adversaries in the
Battle of life and vanquish them decisively
As a Sikh, may I redeem my mind from the vice of attachment
And even when imminent death approaches my mortal life
May I embrace it fighting unwaveringly!!

- Guru Gobind Singh Ji, Dasam Granth, Page No. 99

Director's Message

Aristotle once said, '*Educating the mind instead of educating the heart is no education at all*'. We are only just emerging from a global pandemic. We are watching history unfold and most importantly, we are an active participant in it. It seems to me that education will play a vital role in reshaping our society in the days to come. It is a major task of this generation to find some principles to rule life, and to find a firm footing in these rapidly changing times. It is here that the role of education comes into play, arming today's youth to face future challenges with courage, grit and determination.

However, moving beyond the textbooks and instead, encouraging students to give life to their creative ideas is also an important aspect of imparting holistic education. I congratulate the staff and students of Mata Sundri College, NCWEB Centre for striving to do just that. Despite the pandemic, the staff and students have published ***Aparajita*** in electronic form for five years in a row now. I applaud the Teacher-in-charge, Dr. Indu Kumari and all the teachers in guiding our students in curricular and co-curricular activities alike. I also congratulate the non-teaching staff for their efforts in bringing this magazine to light.

Prof. Geeta Bhatt
(Director, NCWEB)
University of Delhi
Delhi – 110007

Principal's Message

I am immensely pleased to go through ***Aparajita***, the annual e-magazine of NCWEB, Mata Sundri College Centre. The magazine is the space where students and staff can showcase their linguistic, creative as well as artistic abilities. Additionally, the circulation of the magazine enables the contributors to have a wider audience for their talents.

COVID-19 pandemic has brought about an immense upheaval in our traditional education structure. Students and teachers alike had to adapt to online methods of teaching and assessment. However, the online mode did not mean that students could not express their creativity. *Aparajita* is a testament to the resilience of the students and staff to continue in their pursuit of knowledge and arts despite many challenges that the pandemic and consequently, the online mode of education has posed. I highly appreciate the efforts of the staff in guiding the students to express their ideas in the shape of poems, artworks and essays; as well as in maintaining the diverse character of the college by inviting entries in three languages, viz., English, Hindi and Punjabi.

I congratulate all the students, staff and the Teacher-in-Charge of Mata Sundri College for their efforts and hard work in bringing *Aparajita* to publication. I wish each and every one of them all the happiness and success in life.

Prof. (Dr.) Harpreet Kaur
(Principal)
Mata Sundri College for Women
University of Delhi, Delhi – 110002

संयोजक का संदेश

मानव जाति इस धरती पर उच्चतम विकास करने वाली प्रजाति है। बौद्धिक रूप से वह न केवल अन्य जीवों से श्रेष्ठ है, बल्कि उसकी इस श्रेष्ठता में उसे रचनात्मकता का वरदान भी प्राप्त है। मानव चेतना की यात्रा के विभिन्न सोपानों में रचनात्मकता के विविध रूप दिखाई पड़ते हैं। आज के समय में जब जीवन अधिक जटिल हो गया है तो मानव-मन की रचनात्मक शक्ति भी अधिक तीक्ष्ण हुई है। रचनात्मकता का एक सिरा अभिव्यक्ति के माध्यम से जुड़ता है तो दूसरा मनुष्य की चेतना से। वर्तमान सूचना-क्रांति के दौर में अभिव्यक्ति को बल मिला है। सोशल मीडिया का हमारे समाज पर गहरा प्रभाव पड़ रहा है और वह अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम बनकर उभरा है। अपार सूचनाओं के दौर में भ्रामक सूचनाओं के प्रसारण से समाज को क्षति भी पहुंचाई जा रही है। इस हेतु आवश्यक है कि समाज को जागरूक किया जाए। रचनात्मकता इन अर्थों में होती है, जब रचनाकार उपलब्ध माध्यम में अपनी बात इस ढंग से कहे कि जिस ढंग से वह बात अभी तक नहीं कही गई थी। हमारी मौलिकता कहने के इसी नए ढंग में ही निहित होती है।

माता सुंदरी कॉलेज फॉर विमेन के एनसीवेब केंद्र की ई-पत्रिका **अपराजिता** अपनी तरह की मौलिक पत्रिका है। न केवल विषय नया है, बल्कि कहन एवं प्रस्तुति का ढंग भी नया है। इस रूप में यह पत्रिका आपको अपनी ओर आकृष्ट करेगी। यह अंक देखकर अपार हर्ष और संतुष्टि मिल रही है कि इसने साहित्य-सृजन के जितने भी आयाम हो सकते हैं, कमोबेश सभी को स्पर्श करने का सार्थक प्रयास किया है। इस अंक में संकलित लेख, कविताएं और कहानियां अपने समय और समाज के सच का प्रतिबिम्बन करते हैं।

आप सभी की आशाओं के अनुरूप ढालने के प्रयास में यह अंक विद्यार्थियों की अपरिमित रचनात्मक शक्ति का एक गुलदस्ता बन पड़ा है। इस गुलदस्ते के निर्माण में शिक्षक वर्ग का सतत निर्देशन एवं संपादक मंडल का अकथ और अथक सहयोग मेरी एक बड़ी उपलब्धि है। इसके लिए उनका हार्दिक साधुवाद। साथ ही वे लोग भी धन्यवाद के पात्र हैं, जिन्होंने पत्रिका के सुचारु संपादन में प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से हमारा सहयोग किया। सभी को नए अंक की हार्दिक बधाई।

डॉ. इंदु कुमारी
(प्रभारी)
माता सुंदरी कॉलेज एनसीवेब केंद्र
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली – 110002

सह-संयोजक का संदेश

सृजन प्रतिकूल परिस्थितियों में न सिर्फ जारी रहता है बल्कि उसमें एक अनोखी तरह की संवेदना का समावेश हो जाता है। 2022 की **अपराजिता** के सह-संयोजक की भूमिका निभाते हुये यह भाव सघनता से आत्मबोध में उतरा। छात्राओं की रचनाओं में कोविड से उपजी परिस्थितियों की चिंता तो नज़र आई पर उससे अधिक आशा का यह दीप जलता नज़र आया कि हालात कितने भी प्रतिकूल क्यों न हों, वो उम्मीद की सुबह को रोक नहीं सकते। छात्राओं ने जिस उत्साह से पत्रिका के लिए रचनाएं दीं, हमारे शिक्षकगणों ने उतनी सघनता से उनकी जांचकर उन रचनाओं का परिष्कार किया। अपराजिता का यह अंक सृजनात्मकता के शोधन की प्रक्रिया से निकला वह दस्तावेज़ है, जिसमें पाठकों को उगते सूरज की नर्म गर्माहट के साथ मौलिकता के मंद-मंद झोंके महसूस कराएंगे।

ई-पत्रिका के संयोजक के रूप में मैंने छात्राओं व शिक्षकों के जिस सहज संवाद को देखा और महसूस किया उसके लिए अनुग्रहित महसूस कर रही हूं। मैं मैगज़ीन कमेटी के सभी सदस्यों का आभार व्यक्त करती हूं, जिनके सहयोग के बिना यह अंक निकालना संभव न था। मैं विशेष आभार व्यक्त करती हूं केंद्र प्रभारी डॉ. इंदु कुमारी जी का, जिनके प्रोत्साहन ने हर बार हमारे भीतर की उदासीनता का शमन कर उत्साह की मशाल को जलाए रखा है। मैं आभारी हूं आप सभी प्राध्यापकों का, जिन्होंने पत्रिका के स्वरूप को अपने तकनीकी एवं रचनात्मक-बोध से उत्कृष्ट स्वरूप प्रदान करते हुए नवीनता के संचार में सहायक बने।

अंत में, साहित्य और सृजन की प्रक्रिया सतत जारी रखने के प्रति हम सब एक टीम के रूप में प्रतिबद्ध हैं, ताकि वर्तमान पीढ़ी यह सीख सके कि बड़े-बड़े बदलावों और सपनों की कलम किस तरह गढ़ती है।

डॉ. दीपमाला
सहायक आचार्य (राजनीति विज्ञान)
माता सुंदरी कॉलेज एनसीवेब केंद्र

मुख्य संपादक का संदेश

राष्ट्र निर्माण और मानवीय मूल्यों की स्थापना में विद्यार्थियों की सार्थक और सृजनशील भूमिका के उद्देश्य से प्रारंभ **अपराजिता** का 2022 का अंक आपके कर-कमलों में है। माता सुंदरी कॉलेज के एनसीवेब केंद्र के मेधावी छात्राओं की काव्य-प्रतिभा एवं लेखन-कौशल में उभरती प्रतिभाओं से आप प्रत्यक्षतः रूबरू हो सकें, यही हमारा प्रयास है। कॉलेज स्तर पर यह सीमित किंतु सार्थक मंच विद्यार्थियों की मौलिक प्रतिभाओं को उजागर करते हुए उनके लिए प्रथम सोपान का गवाक्ष बने, यही सोच इस अंक में गुंथी है।

मानव और प्रकृति विरोधी उपभोक्तावादी संस्कृति के प्रति आज के समाज में अधिक आकर्षण है। व्यवसायीकरण की पूंजीवादी मानसिकता के घटाटोप में डूबे आज के समाज में ऐसा बहुसंख्यक वर्ग मौजूद है जो रचनात्मकता को नकारता है। फलतः संवेदनशीलता एवं रचनात्मकता की विरोधी ताकतों के भरपूर प्रभाव के बावजूद 'अपराजिता' का अपनी मौलिकता एवं सृजनशीलता के उत्कर्ष के साथ निकलना एक भरोसा पैदा करता है कि इस माहौल में भी एक ऐसा वर्ग मौजूद है जो सृजन एवं जीवन के पक्ष में निरंतर संघर्षरत है। साथ ही यह संकेतित भी है कि इस ई-पत्रिका का निकल पाना साम्राज्यवादी संस्कृति के स्थानीय विरोध की संभावना का प्रथम प्रमाण है और इस विरोध की इकाई की भागीदारी इस पत्रिका का प्रथम उद्देश्य। इस मुहिम में आपके भी शामिल होने के आशय को वेणुगोपाल की ये पंक्तियां प्रकट करती हैं –

न हो कुछ भी सिर्फ एक सपना हो
तो भी हो सकती है एक शुरुआत
और यह एक शुरुआत ही तो है
कि वहां एक सपना है।

अपराजिता का यह अंक कई मायनों में नया है। विषय-विशेष केंद्रित न कर विषयों के स्वतंत्र आकाश में छोड़ने एवं युवा-मन की वैचारिक उथल-पुथल को जानने आदि इसके नयेपन के अहम हिस्से हैं। विद्यार्थियों की इन्हीं वैचारिक और संवेदनात्मक अभिव्यक्तियों की निजी विशिष्टताओं के साथ यह अंक समीक्षार्थ प्रस्तुत है। उम्मीद है कि विद्यार्थियों की बहुमुखी एवं बहुआयामी रचनाओं की नई चेतना का यह प्रत्येक पृष्ठ आपको पुलकित करेगा।

डॉ. धर्मेंद्र प्रताप सिंह
सहायक आचार्य (हिंदी)
माता सुंदरी कॉलेज एनसीवेब केंद्र

Teaching Staff with Principal Madam, Prof. (Dr.) Harpreet Kaur

Teaching Staff

Commerce	: *Ms. Nitika Pasi, Dr. Bharat Bhatt, Ms. Surbhi Pahuja, Ms. Chandni Duggal, Ms. Iti Verma, Ms. Sonika Sehrawat, Ms. Shivani Kishnani, Ms. Aashi Singhal, Ms. Simra Mujahid, Mr. Upendra Kumar, Dr. Ruchi Gupta, Mr. Osama Farooqi, Ms. Himanshi Verma, Mr. CS Nishant Sharma, Ms. Tanya Rastogi, Ms. Soni Jain*
Economics	: *Dr. Tannu, Mr. Hemant Khachi, Ms. Geet, Ms. Chanika Goel*
English	: *Ms. Udita Garg, Dr. Rachna Devi, Dr. Reema Devi, Ms. Uddipana Bora, Dr. Vandana Kumari, Dr. Jasmine Sharma, Ms. Anukriti Bajpai, Anwesha Sahoo, Inderpreet Kaur*
Environmental Science	: *Dr. Sumant Kumar*
Hindi	: *Dr. Indu Kumari, Dr. Dharma Rawat, Dr. Dharmendra Pratap Singh, Ms. Mamta Devi, Ms. Yogita Singh, Dr. Vishal Mishra*
History	: *Mr. Vineet, Ms. Paro Tomar, Mr. Sanjeev Kumar, Ms. Aman Jaiswal, Mr. Amjad Khan, Mr. Sumit Yadav, Ms. Sarika Singh, Ms. Trishala Raj*
Political Science	: *Dr. Deepmala, Dr. Tajudeen, Mr. Saurabh Sharma, Mr. Mayank Mishra, Mr. Godde Surya, Dr. Afreen Bano, Ms. Lakshita Bhagat, Ms. Mahima, Mr. Nikil Madhusudanan, Ms. Shristy*
Punjabi	: *Dr. Jaspreet Kaur Mann, Dr. Satish Kumar, Mr. Kuljeet Singh*

Non-Teaching Staff with Teacher-in-Charge Dr. Indu Kumari

Non-Teaching Staff

1	Shri. Sandeep Kumar	:	*Senior Assistant*
2	Shri. Devender Pal Singh	:	Assistant
3	Ms. Hardeep Kaur	:	Assistant
4	Ms. Sneha Jai Rattan	:	Assistant
5	Shri. Satnam Singh	:	*Library Assistant*
6	Shri. Harpreet Singh	:	*Library Attendant*
7	Ms. Charul Arora	:	Nurse
8	Shri. Satvinder Singh	:	*Security Guard*
9	Shri. Puran Mal	:	*MTS*
10	Shri. Nandan Singh	:	*MTS*
11	Shri. Madan Gopal	:	*MTS*
12	Shri. Amrit Pal Singh	:	*MTS*
13	Mrs. Sudha	:	*Safai Karmchari*

अनुक्रमणिका

क्रम	रचनाएं		नाम	पृष्ठ संख्या
				हिंदी प्रभाग : 12-19
1	कोरोना	:	सपना चौधरी	12
2	खुशी	:	परी गुप्ता	12
3	मेरे पहले लाल रंग की कहानी	:	सृष्टि शुक्ला	12
4	सुकून	:	बुशरा रिज़वी	13
5	जीवन	:	सबा	13
6	दुनिया का दस्तूर	:	ज़ैनब निज़ाम	13
7	माँ की ममता	:	पूजा सिंह	14
8	मैं और मेरी ज़िंदगी	:	प्रीति कौर	14
9	उलझनें आलमन की	:	डॉ. दीपमाला	14
10	हौसला रख आगे बढ़ने का	:	रिया	17
11	बेटियों का अनोखा बयान	:	धन लक्ष्मी	17
12	कोशिश कर हल निकलेगा	:	रुपाली अरोड़ा	17
13	हिंदी भाषा का महत्व	:	साक्षी उपाध्याय	18
14	नारी सशक्तिकरण	:	सृष्टि गोयल	18
15	मज़हब	:	शीतल	18
16	नारी का बदलता स्वरूप	:	सिमरन निदा	19
17	मेरी आरज़ू	:	आकांक्षा	19
				English Section : 22-25
18	Unvoiced Stories	:	Sandhya	22
19	The Woman Poet	:	Udita Garg	22
20	Love is Life	:	Shrishti Goel	22
21	Make Your Life Like a Candle, Not Like an Ice-cream	:	Soni Jain	23
22	Our Life is Like a Book	:	Anchal Bhardwaj	24
23	Being Real	:	Aliya Akhtar	24
24	Beauty of Nature	:	Sakshi Dixit	24
25	Why did I Grow!	:	Vandana	24
26	Stop Global Warming	:	Laiba Noor	25

27	The Beauty of a Women	:	Sapna Chaudhary	25
28	My Promise	:	Sarika Jain	25
29	Imagination	:	Gunjan	25
30	Happiness	:	Aparajita Kumari	25

ਪੰਜਾਬੀ ਭਾਗ : 28-35

31	ਮਾਂ ਬੋਲੀ	:	ਨਮਨਪ੍ਰੀਤ ਕੌਰ	28
32	ਪਵਣੁ ਗੁਰੂ ਪਾਣੀ ਪਿਤਾ	:	ਇਸ਼ਾ ਸ਼ਰਮਾ	28
33	ਮਾਂ	:	ਤਾਨੀਆ	28
34	ਸਦਾ ਖੁਸ਼ਹਾਲ ਰਹੋ	:	ਕੀਰਤ ਕੌਰ	28
35	ਸੋਚ ਦੀ ਲਿਖਤ	:	ਅਨੁਰੀਤ ਕੌਰ	29
36	ਹਿੰਮਤ	:	ਭਾਵਨਾ	29
37	ਪੁੱਤ ਤੇ ਧੀਆਂ	:	ਆਸਥਾ ਤੱਲਾ	29
38	ਇੰਤਜ਼ਾਰ	:	ਹਰਪ੍ਰੀਤ ਕੌਰ	29
39	ਨੂਰ ਨਾਨਕ	:	ਸਿਮਰਨ ਕੌਰ	30
40	ਸੂਰਮੇ ਦੀ ਮੌਤ	:	ਅਵਨੀਤ ਕੌਰ	31
41	ਅਜੋਕੀ ਰਾਜਨੀਤੀ ਜਾਂ ਅੱਜ ਦੀ ਰਾਜਨੀਤੀ	:	ਡਾ. ਜਸਪ੍ਰੀਤ ਕੌਰ ਮਾਨ	31
42	ਅਸਲੀ ਸੱਚ	:	ਸਿਮਰਨ ਕੌਰ	31
43	ਅਹਿਮੀਅਤ	:	ਮਨਪ੍ਰੀਤ ਕੌਰ	32
44	ਅਰਦਾਸ	:	ਸਿਮਰਨ ਕੌਰ	32
45	ਆਨਲਾਈਨ ਸਿੱਖਿਆ ਪ੍ਰਣਾਲੀ	:	ਡਾ ਮੀਨਾਕਸ਼ੀ	33
46	ਭੰਡਿ ਜੰਮੀਐ ਭੰਡਿ ਨਿੰਮੀਐ	:	ਡਾ. ਸਿਮਰਨ ਸੇਠੀ	34

Magazine Committee

Convenor : *Dr. Indu Kumari (Teacher-In-Charge)*

Co-Convener : *Dr. Deepmala*

Editor-In-Chief : *Dr. Dharmendra Pratap Singh*

Hindi Editor : *Dr. Dharma Rawat*

English Editor : *Ms. Paro Tomar, Ms. Uddipana Bora*

Punjabi Editor : *Dr. Jaspreet Kaur Mann, Mr. Kuljeet Singh*

हिंदी प्रभाग

कोरोना

आया कोरोना वायरस आया
लोगों में हाहाकार है छाया
न छुओ न छूने देना
बस अपने ही घर पर है रहना।

सूखी खांसी बुखार होगा
सांस लेने में होगी परेशानी
झटपट करा लेना जांच
मत करना तुम कोई नादानी।

देश में है महामारी आई
हाथ दिन-रात धोते रहना
अकेले रहने में है सबकी भलाई
की अगर थोड़ी-सी लापरवाही
तो लेनी पड़ेगी डॉक्टर से दवाई।

नाक-मुंह मास्क से ढकना
दो गज की दूरी तुम सबसे रखना
भीड़ में बिल्कुल न जाना तुम
वैक्सीन जरूर लगवाना तुम।

पानी हल्का गर्म तुम पीना
साथ में विटामिन-सी भी लेना
रोग-प्रतिरोधक शक्ति बढ़ाओ
कोरोना को दूर भगाओ।

सपना चौधरी
बीए (प्रोग्राम) प्रथम वर्ष

ख़ुशी

छोटी-सी जिंदगी है,
हर बात में खुश रहो।
जो चेहरा पास न हो,
उसकी आवाज़ में खुश रहो।
कोई रूठा हो तुमसे,
उसके इस अंदाज़ में खुश रहो।
जो लौट के नहीं आने वाले,
उन लम्हों की याद में खुश रहो।
कल किसने देखा है,
अपने आज में खुश रहो।
खुशियों का इंतजार किसलिए,
दूसरों की मुस्कान में खुश रहो।
क्यों तड़पते हो हर पल,
किसी के साथ को
कभी तो अपने आप में खुश रहो।
छोटी-सी जिंदगी है,
हर बात में खुश रहो।

परी गुप्ता
बीकॉम (प्रोग्राम) प्रथम वर्ष

मेरे पहले लाल रंग की कहानी

मेरा बचपन बहुत अच्छा था,
न किसी बात की फिक्र, न किसी बात का पता था।
एक दिन मेरी जिंदगी में एक नया बदलाव आया,
जिसने मुझे लड़की होने का मतलब समझाया।
मैं रात में बेफिक्र नींद में सोई थी,
उस मोड़ ने बेवक्त मुझे नींद से जगाया,
अचानक मुझे इतनी ठंड क्यों लग रही थी?
मुझे कुछ समझ न आया,
मेरे बिस्तर में अचानक इतनी नमी क्यों आई?
थोड़ी हिम्मत कर मैंने अपनी चादर हटाई।
उस लाल रंग को देखकर मैं सहम-सी गई,
मुझे लगा रात में क्या मुझको चोट लग गई!
लेकिन उस लाल रंग से,
मैं अनजान कुछ समझ न पाई।
मुझे लगा अगर कोई चोट लगी तो दर्द कहां है?
फिर से मैं नन्ही-सी जान कुछ समझ न पाई।
मैंने डर से बेचैन हो मम्मी को जगाया,
इतनी रात में मेरी बेचैन भरी आवाज़ सुनकर,
मम्मी घबराई और जल्दी से उठकर सीने से लगाया।
फिर पूछा कि क्या हुआ बेटा?

मैंने मम्मी को कसकर गले लगाया और डर से
मम्मी को इशारे से अपना बिस्तर दिखाया।
देखकर मेरा बिस्तर वो हल्की-सी मुस्कुराई,
फिर मुझे गले लगाकर सब समझाया
कि यह हर लड़की के साथ होता है।
यह लाल रंग हर महीने आएगा,
तुम्हें लड़की होने का एहसास दिलाएगा।
यह एक प्राकृतिक प्रक्रिया है
जो कल एक नया जीवन लाएगा।
लेकिन नन्हीं जान में उनकी बात फिर समझ न पाई,
फिर डर से कांप रही मेरे कपड़े मम्मी ने बदलवाए,
दाग न लगे उसके तरीके समझाए,
बदलकर मेरी चादर मुझे सब समझायी
क्यों, कैसे, कब, सब बात बतायी।
यह लाल रंग की कहानी मुझे समझायी।
धीरे-धीरे वक्त ने मुझे सिखाया,
यह लाल रंग डर का नहीं मेरा नया अस्तित्व है,
मुझे समय के साथ यह समझ में आया।

तृप्ति शुक्ला
बीए (प्रोग्राम) द्वितीय वर्ष

सुकून

जब-जब वो रात याद आती है,
मेरी रूह भी कांप जाती है।
शरीर तो ही मरता है,
आत्मा जिंदा रह जाती है।
मेरे शरीर पर तो नहीं, आत्मा पर भी खून मिला,
मेरी रूह कर छलनी, उनकी हवस को सुकून मिला।

उड़ना चाहती थी आसमान में,
पर मेरी खुशी उन्हें रास न आई।
उस अंधेरे में दरिंदगी हुई मेरे साथ,
और मोमबत्तियां मेरे मरने के बाद जलाई।
ऐसा बिखेरा मेरी जिंदगी को कि टुकड़ा न कुछ मिला
ठंडी नहीं हुई चिताएं अभी, न मुझे सुकून मिला।

भटकती रही इंसाफ के दरवाज़े पर,
मेरी आत्मा इंतजार करती रही,
और माँ उन दरिंदों को कोसती,
और मेरे इंसाफ की गुहार करती रही।
जब लटके फांसी पर वे, अंधेरी रात को सुकून मिला,
सात साल बाद इंसाफ पाकर, तब मुझे सुकून मिला।

खुशबू रिजवी
बीए (प्रोग्राम) द्वितीय वर्ष

जीवन

तू जिंदगी से हारकर
यूं न थककर बैठ जा
तू कदमों को जमीन से उठा
फलक तेरे ही लिए है।

तू न उलझनों को गले लगा
थोड़ा आगे चलकर मुस्कुरा
न कर जिंदगी से कोई गिला
ये सब तेरे ही लिए है।

तू रास्ते पर है खड़ा
क्यूं पूछता है किसी से पता
इन पत्थरों को इस डर से
तू न मंजिलों से यूं दूर जा।

आगे जीत का है जो सिलसिला
वह सब तेरे ही लिए है।

सबा
बीकॉम (प्रोग्राम) प्रथम वर्ष

दुनिया का दस्तूर

लड़की बचाओ-लड़की पढ़ाओ के नारे
कब तक लगाओगे?
कब तक बलात्कार होने पर
कैंडल मार्च में जाओगे?

क्या पता कैंडल मार्च होने के बाद
जब तुम घर आओगे,
खुद को तुम फिर वही निर्भया पाओगे?
मंदिर-मस्जिद बनाने के चक्कर में लड़-मर जाओगे,
फिर उसी ईश्वर से शांति की कामना मांगने जाओगे।
अलग दस्तूर है दुनिया का,
देवी बोल के पत्थर पर कपड़े चढ़ाओगे,
तो कभी बोझ समझकर सूली पर चढ़ाओगे,
पर कभी उसे इंसान नहीं समझ पाओगे।

जैनब निज़ाम
बीकॉम (प्रोग्राम) तृतीय वर्ष

मां की ममता

कोटि-कोटि आभार तेरा मां
वारी-वारी ये प्यार तेरा मां
जीवन मुझ पर है दान तेरा मां
न तार सकूं ये कभी एहसान तेरा मां
तूने सींचा है मुझे अपनी सांसों से
वाकिफ न होने दिया अपने आंसू से
मेरा पहला आहार तुझी से
मेरे लिए सहे हर वार तुझी ने
मुझे अंगुली पकड़ चलना तूने सिखाया था
अपने आंचल में तूने मुझको
आभूषण से अधिक सजाया था
मेरा रूठना तेरा मनाना
जो अड़ जाऊं तुझे गुस्सा आना
तब प्यारी-सी एक चुम्बन पर सब सिमट जाता था
फिर तेरे हाथों से निवाला,
जिसे आज भी फिर जी चाहता है
वो स्वाद नहीं कहीं और जहां में
जो मां तेरे हाथों में आता है।
तू ही मित्र है, तू ही शिक्षिका
तेरे बिना ये जीवन भिक्षु-सा
निःस्वार्थ धरा पर बस मां का प्यार है
उससे बढ़कर न ये संसार है।
तुझे परिभाषित कर सकूं
वो शब्द और कहां से लाऊं मां
मां तो ममता की एक मूरत है
जिससे बढ़कर न कोई शब्द न कोई सूरत है।

पूजा सिंह
बीकॉम (प्रोग्राम) द्वितीय वर्ष

मैं और मेरी ज़िंदगी

न जाने क्या ढूंढती है?
न जाने क्या चाहती है?
बार-बार मुझसे एक नया सवाल करती है
और एक जवाब का इंतजार करती है।
कभी हाथ पकड़ साथ चलती है,
तो कभी बीच राह छोड़ दूर कहीं खो जाती है।
कभी अचानक सामने आ जाती है,
तो कभी बहुत इंतजार कराती है।
कभी मुस्कुरा देती है,
तो कभी नाराज़-सी लगती है।
कभी सोचती हूं कि ये मेरी नहीं किसी और की है,
कभी तो समझ आती है तो कभी पहेली बन जाती।
कभी सच, तो कभी झूठ लगती है,
कभी खुशी देकर छिप जाती है,
तो कभी दुख होकर सामने आ जाती है।
फिर भी दोनों साथ चलते हैं,
मैं और मेरी जिंदगी।

प्रीति कौर
बीए (प्रोग्राम) द्वितीय वर्ष

उलझनें बालमन की

बच्चे किसी भी समाज की नायाब पूंजी होते हैं। बच्चों का सर्वांगीण विकास हर समाज की मूलभूत जिम्मेदारी है। हाल ही में फेसबुक के संस्थापक मार्क

जुकरबर्ग ने अपनी दौलत का एक बड़ा हिस्सा इसलिए दान कर दिया ताकि वे अपनी नवजात बेटी के लिये एक बेहतरीन दुनिया का निर्माण कर सकें। जुकरबर्ग की यह सोच हमको यह विचारने पर मजबूर करती है कि हम अपने देश के बच्चों के प्रति अपनी सोच का पुनः निरीक्षण करें। भारत की समाज-व्यवस्था में यदि सबसे अधिक किसी के अधिकारों की उपेक्षा होती है तो वे हमारे बच्चे ही हैं। हमारे देश में ऐसे बच्चों की संख्या बहुत अधिक है जो मूलभूत सुविधाओं से पूरी तरह वंचित हैं। लेकिन जो बच्चे मध्य-वर्ग या उच्च-वर्ग में आते हैं, यानी जिनके सामने मूलभूत सुविधाओं का अभाव नहीं है पर देखने में आया है कि उनके साथ अन्य कई तरह की दुश्वारियां होती हैं, जिनका सीधा प्रभाव उनके मानसिक विकास पर पड़ता है। गौरतलब है कि सबसे अधिक नकारात्मक भावों का संचयन बचपन में ही होता है और व्यक्ति उनके परिणाम पूरे जीवन भुगतता है। इसलिए जीवन को सकारात्मकता से जीने के लिये जरूरी है कि बचपन के कोरे दामन को नकारात्मक संस्कारों से बचाया जाए।

दरअसल, हमको बचपन से ही नकारात्मक भावों से निपटने का जरूरी अभ्यास नहीं कराया जाता है। बचपन की तमाम कड़वी यादें जेहन में लंबे समय तक बनी रहकर अपना स्थायी स्थान बना लेती हैं। जाने-अनजाने माता-पिता अथवा किसी सगे-संबंधी द्वारा किया गया उपेक्षापूर्ण बर्ताव पूरे जीवन मानवीय व्यवहार को प्रभावित कर सकता है। देखा गया है कि बचपन में जिन बच्चों के साथ मानवोचित व्यवहार न हुआ हो वो बाकी स्वयं को अन्य सामान्य बच्चों की तुलना में कुंठाग्रस्त महसूस करते हैं। प्रायः वे स्वयं को खुलकर अभिव्यक्त नहीं कर पाते। यहां तक कि अनुशासन के नाम पर भी बच्चों के साथ की जाने वाली सख्ती भी उन्हें दब्बू बनाती है।

प्रसिद्ध शायर बशीर बद्र ने कहा है, 'जिंदगी भी अजीब तरीका है / जिंदगी भर उसी की प्यास रहे / आज हम सबके साथ खूब हंसे / और फिर देर तक उदास रहे।' देखा गया है कि कुछ बच्चे सभी लोगों के सामने बेहद एक्सप्रेसिव होते हैं पर जब भी अकेले में वे जाते हैं, बेहद उदास हो जाते हैं। माता-पिता के दबाव में वे सबके सामने कविताएं सुनाते हैं, डांस भी कर लेते हैं। कभी-कभी तो अनिच्छा से आजकल के रीयलिटी शो आदि में सिर्फ इसलिए भाग लेते हैं क्योंकि उनके माता-पिता ने उनको तथाकथित सफलता की भेड़चाल में शामिल होना और कमरतोड़ मेहनत करना सिखा दिया है। कई बार ऐसे बच्चे एक स्टंट्स सिंबल अथवा शो-पीस से ज्यादा नहीं लगते। पहले और अब के समय में सिर्फ एक अंतर आया है कि पहले बच्चों को रिश्तेदारों और मित्रों के सामने कविता या कहानी सुनाने के लिये बाध्य किया था और अब बच्चों को सीधे पकड़कर किसी रीयलिटी शो के हवाले कर दिया जाता है। यह बेहद खुशी की बात होती यदि यह सब बच्चों की रचनात्मकता को प्रोत्साहित करने के लिए किया जाता। सच यह है कि बचपन से ज्यादा रचनात्मक और कुछ नहीं होता, पर हम उसकी कीमत पर नकली रचनात्मकता को उभारने में लगे हैं। वास्तव में रचनात्मकता से खुशी और उत्साह पैदा होना चाहिए। रचनात्मकता के नाम पर बच्चों पर पड़ता मानसिक और शारीरिक दबाव न सिर्फ उनकी सहजता को प्रभावित करता है वरन उनको उस अंधी दौड़ का घोड़ा भी बना देता है जिसमें किसी कारण से उनके माता-पिता नहीं दौड़ पाए। बच्चे उस अंधी दौड़ में शामिल हो जाते हैं जिसमें अंत तक जीतकर भी उनको वह खुशी नहीं मिलती जो उनको सहज रूप से विकसित होने से मिलती। वास्तव में हम बच्चों पर जिस दौड़ में शामिल होने का दबाव बना रहे हैं वह उनसे वे बेशकीमती पल छीन ले रही है जिसका उपयोग बालमन अपनी कल्पनाओं को गढ़ने और उनमें रंग भरने के लिए करता है।

बदलते सामाजिक परिवेश ने भी बच्चों के मनोविज्ञान को अलग तरीके से प्रभावित किया है। पहले

अधिकांश लोग अपने मूल गांवों से जुड़े हुये थे। जब-जब स्कूल में छुट्टियां आतीं, लोग गांव जाकर अपनी मूल संस्कृति से जुड़ जाते थे। होली, दीवाली और अन्य अवकाश के दिनों में बड़ों को ही नहीं, बच्चों को भी इस संस्कृति से रूबरू होने का अवसर मिलता था। प्रकृति का सानिध्य और अपनों का साथ न सिर्फ उनके जीवन को सुरक्षा और अपनेपन से भरता था बल्कि उनके पास एक अलग दुनिया को देखने का अवसर होता था। बच्चे स्वाभाविक रूप से प्राकृतिक मनोरंजक खेलों से जुड़ते थे। लेकिन अब के परिवेश में उनका न केवल गांव से जुड़ाव खत्म हो गया है, बल्कि वे अपनी मूल संस्कृति से कट गए हैं। अब बच्चों को गर्मी की छुट्टियों में किसी न किसी एक्टिविटी क्लास में दाखिल करा दिया जाता है। ऐसा कई बार उनकी गुणवत्ता बढ़ाने के लिये नहीं वरन उनको ऑक्यूपाई रखने के लिये किया जाता है। घर में रहकर ऊधम करेंगे इसलिए बेहतर है कि उनको कोई न कोई काम दे दो।

स्कूल में भी अध्यापकों द्वारा किया गया सख्त व्यवहार भी बच्चों के भीतर अनजाने में भय का वो बीज बो देता है जो समय आने पर विस्फोटक रूप धारण कर सकता है। स्कूल की परफार्मेंस रिपोर्ट को प्रभावशाली बनाने के लिये न जाने कितनी अनावश्यक एक्टिविटी को बच्चों के सिलेबस का हिस्सा बना दिया गया है। इन सबका उद्देश्य सिर्फ इतना भर है कि बच्चों को ज्यादा से ज्यादा समय उलझाए रखा जाए। बच्चा चौबीस घंटे जितना व्यस्त नजर आयेगा उतना अधिक यह प्रभाव पैदा होगा कि उसमें गुणात्मक सुधार हो रहा है। पहले बच्चों पर यह दबाव पांचवीं क्लास के बाद आरंभ होता था परंतु गुणवत्ता की यह रेस अब आरंभिक क्लास से ही शुरु हो गयी है।

स्कूल में छात्र और अध्यापक के मध्य जिन सहज और स्वस्थ संबंधों को विकसित होना चाहिए था वह अब नजर नहीं आते। देखने में आया है कि स्कूल से लेकर विश्वविद्यालयों तक कक्षाओं में एकतरफा संवाद का वातावरण मिलता है। ऐसा लगता है मानो टीचर दोतरफा संवाद वाली कक्षाओं में स्वयं को सहज नहीं पाते। एक बच्चे का अधिकांश समय क्लासरूम में व्यतीत होता है। भारतीय स्कूलों का अभी भी वातावरण व्यक्तिगत प्रतिस्पर्धा को प्रेरित करने वाला ही है। अभी भी हमारे टीचर इस बात को स्वीकार करने के लिये तैयार नहीं हैं कि हर बच्चा अपने आप में विशिष्ट है। यहां तक कि वे बच्चे भी, जो क्लास में अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पा रहे हैं, किसी न किसी विशिष्ट गुण के धनी होते हैं। शिक्षा-व्यवस्था का काम होना चाहिए कि वह हर बच्चे में प्राकृतिक रूप से मौजूद उस गुण को पहचाने और विकसित करे, न कि किसी गुण को जबरदस्ती पैदा करने की हास्यास्पद कोशिश की जाए। हम अभी तक अपनी स्कूली शिक्षा में ऐसे प्रयोग करने से बचते रहे हैं जो हर बच्चे में मौजूद उसके मूल गुण को पोषित करें। हम आज तक स्वीकार नहीं कर पाए हैं कि एक बेहतरीन कलाकार के लिए गणित का ज्ञान आवश्यक नहीं है और न किसी संगीतकार होने के लिये विज्ञान की विशेष समझ होना जरूरी है। जरूरत इस बात की है कि बच्चों की सहज रुचि को कैसे विकसित किया जाए। वैसे हम आज तक इस फार्मूले को इसलिए भी मान नहीं पाये हैं क्योंकि तमाम प्रमाणों के बावजूद अधिकांश अभिभावक यह समझ ही नहीं पा रहे कि डॉक्टर, इंजीनियर, प्रशासक और टीचर होने के अलावा अन्य दूसरे गैर-परंपरागत अथवा कम परंपरागत पेशे भी अर्थतंत्र और सामाजिक मान्यताओं की नजर से सम्मानपूर्ण और सुरक्षित हो सकते हैं।

आज के समय में जब हम सब भयंकर तनाव, ऊहापोह और मारामारी का जीवन जी रहे हैं, ऐसे में हमको अपने बच्चों के लिये एक खिड़की खोलनी होगी जिससे ताजा हवा भीतर आ सके और उनकी स्वाभाविक योग्यता निखर कर सामने आ सके। इसके लिए जरूरी

है कि उनके पास पर्याप्त खाली समय हो जिसमें वे अपनी कल्पनाओं की उड़ान को पंख दे सकें। बाल्यकाल में आवश्यक है कि सिखाने के नाम पर भूल से भी किसी बच्चे के साथ ऐसा व्यवहार न किया जाए, जिससे उसको भावनात्मक रूप से आघात पहुंचे। अमूमन हमको ऐसा लगता है कि जब तक बच्चों के साथ यौन-शोषण जैसा कुछ वीभत्स न हुआ हो तब तक उसे कोई मानसिक आघात नहीं पहुंचता परंतु बहुत से मामलों में अभिभावकों का अति सख्त रवैया बच्चों को भावनात्मक रूप से बेहद कमजोर बना देता है। बचपन में की गयी तुलना आपसी तुलना भी बच्चों के मन में उम्रभर के लिए हीनताबोध जाग्रत कर सकती है। इसलिए जरूरी है कि बाल्यकाल में बच्चों को अनुशासन के साथ-साथ पर्याप्त मात्रा में प्रेम दिया जाए। अभिभावकों को हमेशा एक बात ध्यान रखनी चाहिए कि बच्चा आपके स्टेटस को बढ़ाने वाला सामान नहीं है। अतः अपनी झूठी शान की खातिर बच्चों का इस्तेमाल नहीं किया जाना चाहिए ताकि उनकी बाल-सुलभता न छिने। हो सके तो बच्चों के साथ बचपन का आनंद लें। इससे आपको तो भरपूर मानसिक शांति मिलेगी ही, बच्चों का भी सहज शारीरिक-मानसिक विकास संभव हो सकेगा, जो अंततः हमारे समाज और देश की स्वाभाविक प्रगति में सहायक होगा।

डॉ. दीपमाला
अतिथि प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान

हौसला रख आगे बढ़ने का

हौसला रख आगे बढ़ने का
मुश्किलों से लड़ने का
यही तो एक तरीका है
ऊंची उड़ान भरने का।
लड़खड़ा भी जाये अगर कदम
तो गम न कर
यही तो वक्त है तेरा
कुछ कर गुजरने का।
भले ही राहों में मिले पत्थर तो
मिलने दे और हिम्मत कर आगे बढ़
तेरे ही पास है हर हल।
बस सब्र रखकर देख
यही तो वक्त है तेरा
पत्थर के फूल बनने का
बस एक बार भरोसा कर तो तू
खुद पर, मज़ा तुझे भी आने लगेगा
फिर गिरते-गिरते संभलने का।

रिया
बीए (प्रोग्राम) द्वितीय वर्ष

बेटियों का अनोखा बयान

बेटी बनकर आई हूं मां-बाप के जीवन में
बसेरा होगा कल मेरा किसी और के आंगन में
क्या ये रीत भगवान ने बनाई होगी?
देकर जन्म पाल-पोसकर जिसने हमें बड़ा किया
कहता है आज नहीं तो कल तू पराई होगी
और वक्त आया तो इन्हीं हाथों ने हमें विदा किया
टूटकर बिखर जाती है हमारी जिंदगी वहीं
पर फिर भी उस बंधन में प्यार मिले जरूरी तो नहीं,
क्या रिश्ता हमारा इतना अजीब होता है?
क्या बस यही हम बेटियों का नसीब होता है?

धन लक्ष्मी
बीए (प्रोग्राम) द्वितीय वर्ष

कोशिश कर हल निकलेगा

कोशिश कर, हल निकलेगा
आज नहीं तो, कल निकलेगा
अर्जुन-सा लक्ष्य रख, निशाना लगा
मरुस्थल से भी फिर, जल निकलेगा

मेहनत कर, पौधों को पानी दे
बंजर से भी, फल निकलेगा
ताकत जुटा, हिम्मत को आग दे
फौलाद का भी, बल निकलेगा
सीने में उम्मीद को, जिंदा रख
समंदर से भी, गंगा जल निकलेगा
कोशिश जारी रख, कुछ कर गुजरने की
जो कुछ थमा-था है, चल निकलेगा
कोशिश कर, हल निकलेगा
आज नहीं तो, कल निकलेगा।

रुपाली अरोड़ा
बीए (प्रोग्राम) द्वितीय वर्ष

हिंदी भाषा का महत्व

सारा जहां यह जानता है
यही हमारी पहचान है
संस्कृत से संस्कृति हमारी
हिंदी से हिंदुस्तान है।
जिसमें है मैंने ख्वाब बुने
जिससे जुड़ी मेरी है आशा
और मुझे पहचान मिली
वह मेरी हिंदी भाषा है।
जब भी होता यह दिल भावुक
और यह जबान लड़खड़ाती है
ऐसे में बस अपनी मातृभाषा
ही काम आती है।
भारत के हर कोने को
आपस में जो साथ मिलाए
संपर्क सूत्र का काम करे जो
वह हिंदी भाषा कहलाए।
जुड़े हैं सपने मेरे जिससे
जुड़े हैं अरमान मेरे
हिंदी बस भाषा नहीं है मेरी जान।
आशीर्वाद-सी है मातृभाषा हिंदी
हिंदी हमारी विरासत है।
बदलेंगे हालात हमारे
यह धरा भी मुस्कुराएगी
जन-जन की भाषा हिंदी
जब दिल से अपना ली जाएगी।

साक्षी उपाध्याय
बीए प्रोग्राम (द्वितीय वर्ष)

नारी सशक्तिकरण

पढ़ी-लिखी हो तो क्या हुआ
हो तो तुम एक औरत हो।
नौकरी कर ली तो क्या हुआ
हो तो तुम एक औरत हो।
तुमसे ऊंची-नीची होती खानदान की नाक
बेटियां आज भी हैं बाप के कंधे का बोझ।
बेटा जवान तो बाप का सहारा
बेटी जवान तो बाप 'बेचारा'।
कहीं कोई लड़की छिड़ी तो 'वो भी' लड़की ही होगी,
तंग कपड़े पहने होंगे या रात में निकली होगी।
उसके कपड़े नहीं तुम्हारी मानसिकता 'तंग' है,
अपने आत्मसम्मान की खातिर लड़नी हमें अब जंग है
बहुत हुआ अपमान, अब होगी आरपार की लड़ाई।
नयी सुबह की एक किरण, अंधेरा चीरने को है आई।

शुचि गोयल
बीकॉम (प्रोग्राम) प्रथम वर्ष

मज़हब

क्या राम यही चाहते हैं मैं केवल हिंदुओं का रहूं?
हर अच्छी-अच्छी बातें मैं हिंदुओं से ही कहूं?
क्या अल्लाह कहता है मैं केवल मुसलमानों का हूं?
पर वो तो कहता है मैं सारे जहान का हूं।
क्या ईसा मसीह अमर हुए ईसाइयों के लिए?
वे तो अमर हुए हर मज़हब के भाईयों के लिए।

क्या मानव की कही बातें यूं ही फिजूल जायेंगी?
नहीं, उनकी कही बातें एक दिन रंग लाएंगी।
जिस दिन एक हो जाएगी मजहब चार
उस दिन हर इंसान के कण-कण में बस जाएगा प्यार
मानकर इन चारों की बातें खुशियां जरूर लाना
प्यार से जीना सीखेगा यह सारा जमाना।

शीतल
बीए (प्रोग्राम) प्रथम वर्ष

नारी का बदलता स्वरूप

मैं वह नारी हूं जो
हर एक काम कर लेती है
लेकिन पता नहीं दुनिया मुझे
कमजोर क्यों समझती है?
लोगों की इन बातों से अब टूट गई हूं,
मैं अब बिखर गई हूं,
लेकिन मैं हार नहीं मानूंगी
इन टूटे हुए टुकड़ों से नई जिंदगी बनाऊंगी।
देखो, तुमसे ज्यादा ताकतवर हूं मैं
नारी को अबला समझ भ्रूण में मार देते हो,
दहेज की लालच में दुत्कार देते हो।
क्या मेरा कोई सपना नहीं?
क्या मेरा कोई जीवन नहीं?
क्यों मुझे मेरे हक का भी जीवन नहीं जीने देते?
मत भूलो तुमको जिंदगी देने वाली मैं ही हूं
देखो, तुमसे ज्यादा ताकतवर हूं मैं।
मैं नहीं चाहती मुझे देवी की तरह पूजो
बस मेरा सम्मान कर लो,
मेरी भी एक जिंदगी है इतना एहसास कर लो।
दुखों को अपने अंदर लेकर भी मुस्कुराने वाली हूं मैं
देखो, तुमसे ज्यादा ताकतवर हूं मैं।
कभी पत्नी बनकर प्रेम निभाती हूं मैं,
तो बहन बनकर कभी भाई का स्नेह पाती हूं मैं
हर रूप में खुद को समेट लेती हूं मैं
अपनी बेरंग जिंदगी को सवार लेती हूं मैं।
तो कभी कमजोरी को भी ताकत बनाकर
जिंदगी जीत लेती हूं मैं।
देखो, तुमसे ज्यादा ताकतवर हूं मैं।

सिमरन सिंह
बीए (प्रोग्राम) प्रथम वर्ष

मेरी आरजू

वह जिंदगी मैं जीना चाहती हूं जो किसी ने न जी,
मैं खुद की आरजू खुद से करना चाहती हूं।
यह बात उस समय की है जब मैं
जिंदगी के ऐसे पड़ाव पर थी
जहां न बचपन था मेरा, न उम्र का तकाजा
लेकिन उस वक्त भी मैं
खुद की आरजू खुद से करना चाहती थी।
फैसले जो हमारे लिए गए मेरी जिंदगी के
हर फैसले पर एक नई अदालत बैठ जाती थी।
लेकिन उस वक्त भी मैं
खुद की वकालत खुद से करना चाहती थी।
आज फिर एक अदालत बैठी है
एक और फैसला लिया है मेरी जिंदगी का
लेकिन आज भी मैं अपनी आरजू
अपनी ही अदालत में करना चाहती हूं।
लोगों की ख्वाहिशों को लेकर
रिश्ते के दायरे में रहकर जिंदगी बिताई है मैंने।
क्या रिश्ता था वह जो
यह कह देता था कि यही है तेरी जिंदगी
वक्त के उस दौर से जिंदगी के उस मोड़ से
मैं मुस्कुराकर गुजर जाती थी
लेकिन उस वक्त भी मैं
खुद की आरजू खुद से करना चाहती थी।

आकांक्षा
बीकॉम (प्रोग्राम) तृतीय वर्ष

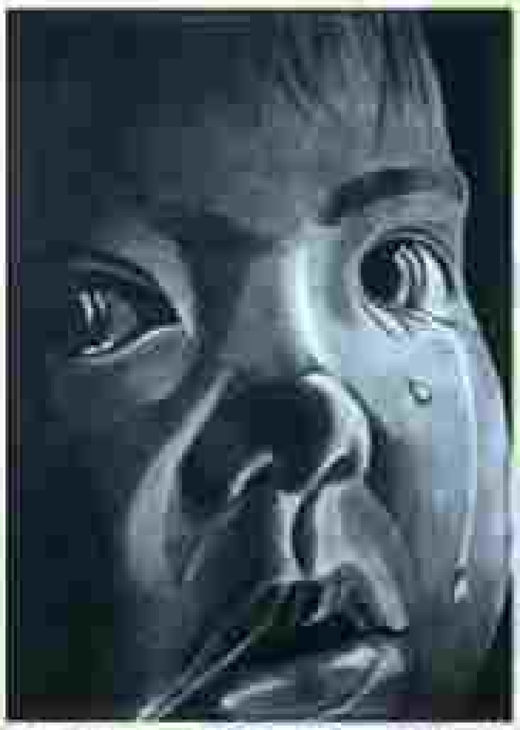

Anjali Tiwari (B.Com. Prog. 1st Year)

Vandana Sharma (B.Com. 1st Year)

Ikjot Kaur (B.Com. 1st Year)

Samia Rehman (BA Prog. 1st Year)

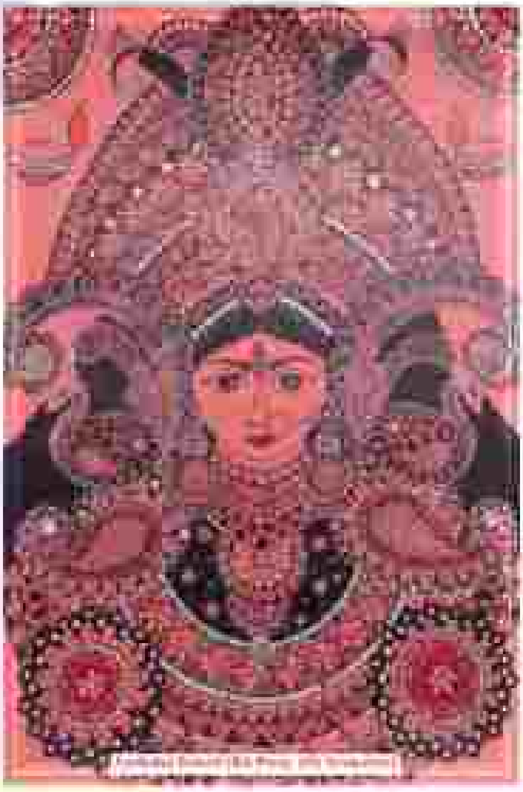

Apeksha Rawat (BA Prog. 3rd Year)

Simran Kaur (BA Prog. 1st Year)

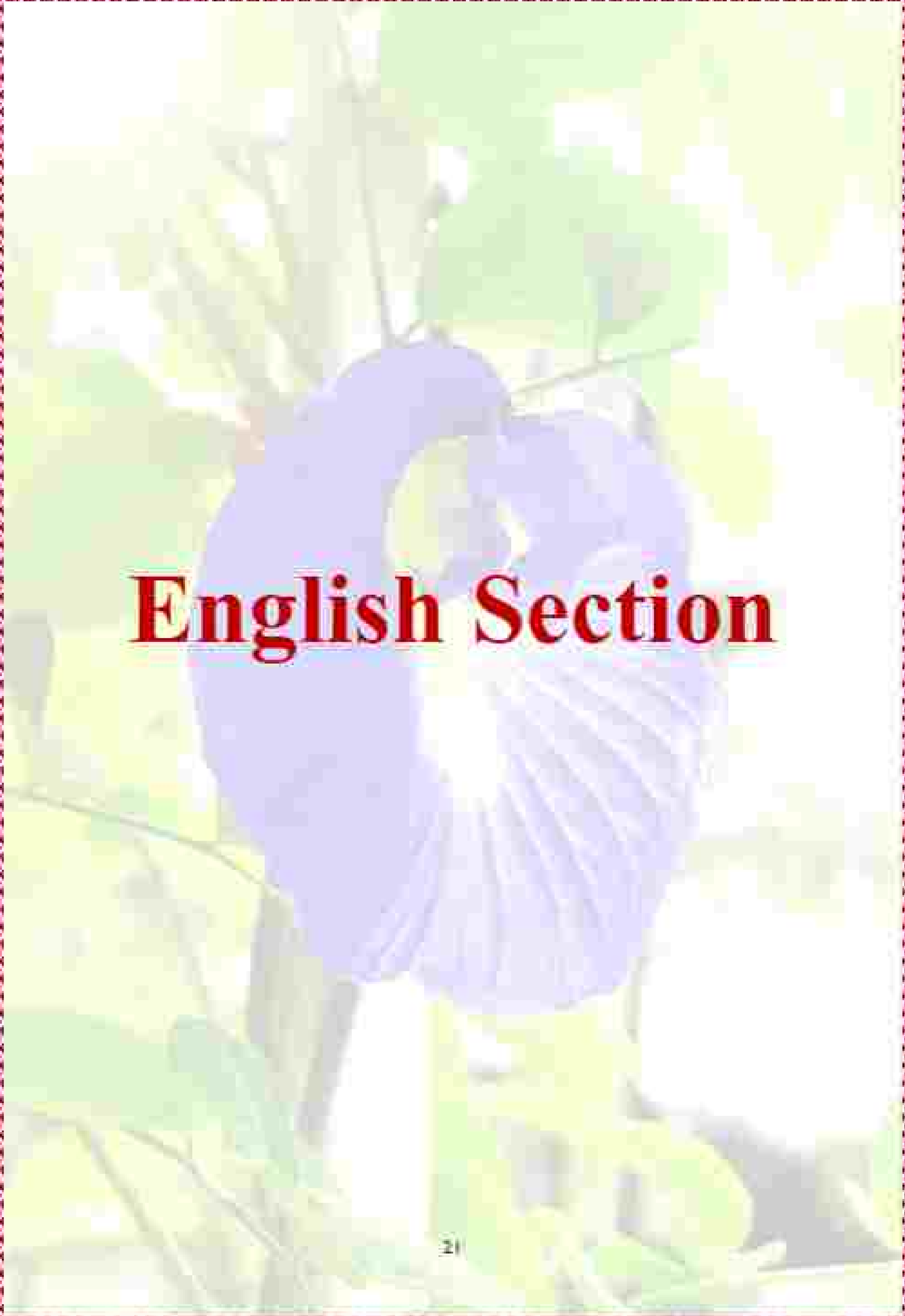

English Section

Unvoiced Stories

'Unvoiced' does not mean no voice
We have voices sans peace
Do you really want to know about
Our limitations and boundaries?
Try to live a girl's life
If only for a week
Even today
We are not fully acquainted with Liberty and Equality
Liberty and Limitations
Cannot be put together in one sentence
We yearn for a happy life
But we are not living a normal life
If his choice matters
Then why not ours?
We are not from another planet
We cry sometimes
but does that mean
that we are weak?
We got freedom from the British in 1947
Unfortunately
We are still not free from our prejudices
We face discrimination
And it causes frustration
I ask again
What is our crime?
Our constitution gave us rights
But
We always have to struggle to exercise them
Who gave society the right?
To deny rights to girls?
No one treats us an equal
Just because we are girls
It's ridiculous
We are not kites
Whose threads are controlled by others.
We are free birds,
that carve their own path of flight.
It's our life, our choice
No one can control our voice.

Sandhya
B.Com. (P) 1st Year

The Woman Poet

It is wrong.
Wrong to tell the woman poet
That her poems are read and heard
Because of her pretty face
And deny her words,
Her craft, her talent.

It is wrong,
Wrong to tell her
That her poetry sells
Because she writes of scandal
Of love, eroticism, womanly bodies
And that she should think of writing something else.
All this has been said.

When a woman writes of love,
She battles a thousand questions
Of consummation, separation, menstruation.
When a woman writes of making love,
Her status is once again imagined,
Her body, her availability.
She herself becomes society's target.

When a woman speaks of bodies,
Her own is always in question,
Imagined, ridiculed, groped, raped.
Ask women not to write of better things,
Of greater, "more important" stuff.

Trust her,
For when a woman writes of love,
When she writes of blood
She's marking another relevant revolution.
She's fighting behind your disgust, giggles or want
To establish herself as a poet,
But more so, as human.

Udita Garg
Guest Faculty, English

Love is Life

Love is
The fabric of life,
Holding us together.
For without it
Do we have anything at all?
We find love
In our children,

In their soft-hearted innocence.
We find love
In our family
In our friends,
Old and new.
For both love and friendship
Can transcend anything
Oceans, countries, even time itself.

Love is a melody
It is not bitter, jealous or angry.
Love is the chords of a
Softly strummed guitar,
Love is a wave on a stormy sea.
The calm of a garden,
The peace of a quiet night.
Love lives inside our hearts
Love is beautiful, love is life.

Srishti Goyal
B.Com. (P) 2nd Year

Make Your Life Like a Candle, Not Like an Ice-Cream

Life is a four-letter word that comes with multiple meanings and experiences. It is not just about existence but also about how an individual defines that existence. Therefore, it is important to look at life not just from one single perspective. Many only exist while others try to live. There is no particular method to lead life in a meaningful way. However, everyone tries to be worthy enough by being successful and proud of their living. A candle represents the light in darkness of life, especially individual life. It is the symbol of holy illumination, the spirit of truth. According to Buddha, 'Thousands of candles can be lighted from single candle, and the life of the candle will not be shortened. Happiness never decreases by being shared.' It's an individual choice to live life like a candle or an ice-cream. When life is compared with an ice-cream, the main motto is to enjoy, live life to the fullest, and have fun before one leave the world. People with such thinking are selfish. They don't bother about other people's suffering. The whole world revolves around their comfort. This is not to say that people shouldn't make decisions for their own betterment. But decisions taken at the expense of others can turn self-awareness to selfishness. If one chooses to live like an ice-cream, which tastes good for a while but finally melts, they lose inner happiness and satisfaction. A candle also melts like an ice-cream; however, it lights up while melting. Life is a burning candle. A candle melts slowly and gradually while giving a ray of hope to remove the darkness. Similarly, a single person can try to wipe out the pain and suffering of others and lighten people's hearts with love and care. The motto of one's life should be like that of a candle, which shows the right path for moving ahead. If one has a sense of empathy and generosity toward others, it makes one internally happy, more satisfied and blissful. A life lived in such a way will be purposeful and meaningful. In this journey of life, everyone should strive to be like a candle. But not everyone can do so. It can be due to physical, emotional and financial incapability. However, being kind and helpful to others requires a healthy mind. So, one can try to maintain a balance between being an ice-cream and being a candle. As an age-old adage goes, 'As you sow, so shall you reap'. Applied to life, Buddha expounded on the law of karma which exemplifies the cause and effects of our actions. Mentors including teachers, spiritual leaders, and influencers of life have the important responsibility of shaping the lives of young, impressionable children. With this responsibility there comes great pride and joy. A good teacher is like a candle; he/she/they consume themselves to light the way for others. Teacher spends more energy on their pupils. They work hard and light a rich way for pupils to follow. A good mentor is like a candle who everyday lights the minds of many students.

Suni Jain
Guest Faculty, Commerce

Our life is like a book

Life is like a book.
Some chapters are sad,
some happy, and some exciting.
But if you never turn the page,
you will never know
what the next chapter has store for you.

Anchal Bhardwaj
BA (Prog) 2nd Year

Being Real

Why do we have to pretend?
Why the need to put a façade?
All I want to ask is that
Why are we all afraid of being real?
Why does the world only believe in fake?
Is being real that boring?
Why does Indian society give respect to only those who speak English?
Why do people always find the need to be "cool"?
Why do we judge a person by their social media followers?
Why being 'modern' is 'cool' and being 'traditional' is not?
Why is being independent 'cooler' than taking care of your parents?
Why do we need to change ourselves, conform to the world?
Why are we not accepting ourselves as they are?
Why is working in a foreign country better than working in your own country?
Why are people so desperate for attention?
Being real is natural and
Natural is beautiful
It doesn't matter how rich you are
The only thing that matters is how happy and real you are
Being real is not boring
Being real is 'cool'
Being real is real happiness.

Aliya Akhtar
B.Com. (P) 1st Year

Beauty of nature

Nature's beauty, full of flowers
Everyone bathed in fragrance shower
There is no match to nature's power.

God makes nature calm and cool
Everyone wants to swim in this pool
If you too want to know nature
You should go with a bag to school.

Sakshi Dixit
B.Com. (P) 1st Year

Why did I grow?

Mommy this bellyache is too high
What if I'm about to die!
Am I going to be treated!
And there!
Can I have permission to meet?
Ache!
My ache this time is a murderous ache.
Can I have some brownies and cake?
It's injured my eyes with annoyance.
Watching the irrepressible over-flow of flood
My head bursts out every time I see my blood.
They scold me,
Warn me to stay calm and rest.
How can I!
When my 10-80ml of blood
Is almost going to waste!
Now I'm not excited for any puja
Or even Diwali anymore
In order to welcome goddess Laxmi
They decorate their houses and doors
But if they get to know
I got my period that day
They will start teaching me
About my bad luck and will
Instruct their actual Laxmi (that's me!)
Not to sit, stand, walk or sleep.
Because their stone goddess
Laxmi is sitting in the puja
Right there.

Vandana
BA (Prog) 3rd Year

Stop Global Warming

Believe it or not, the fact is that the earth is becoming warmer. Due to increase in carbon dioxide emissions, global temperatures are increasing at an alarming rate causing icebergs to melt. This threatens the polar bear, its habitat, and causes disasters due to rising sea levels. To the human race I ask, 'How to stop global Warming?' Reduce, Reuse, Recycle. Reduce carbon dioxide emission, reuse non-degradable materials resources. Remember, this is our earth and it's our life. Our task is to help combat global warming now.

Laiba Noor
BA (Prog) 3rd Year

The Beauty of a Woman

The beauty of a woman
Is not in her appearance.
The beauty of a woman
Lies in her eyes
It is the gateway to her heart
Where endless love resides.
From the care and love that she gives
And the passion that she shows
We know that
The beauty of a woman
Only with passing years grows.

Sapna Choudhary
BA (Prog) 1st Year

My Promise

Each day I will do my best.
And I will not do anything else.
My work will always please,
And I will never accept a mess.
My writing will be neat,
And I simply will not be happy,
Until my papers are complete.
I will always do my homework,
And I will try on every test.
I will never forget my promise
To do my very best.

Sarika Jain
B.Com. (P) 1st Year

Imagination

Every day begins with numerous schedules
And numerous emotions.
But I need a rest,
To feel my best.
I am on a vacation
This is my imagination.
My mind is full
Dwelling on the past.
But all I want
Is a cup of coffee in my hand
And see beautiful lands.
That I am on a vacation,
It is my imagination.
My hands are bound
Painfully creating sounds.
But all I want
Is to hold social sessions
And follow my passions.
I want to be on a vacation
This is all my imagination.

Gunjan
B.Com. (P)1st Year

Happiness

Happiness is a necessity and not a luxury. Happiness is not a state of life, it is life itself. The most indispensable feature of life but the most neglected one is Happiness. It is perfectly true that a smile is infectious. A jolly person brings a smile to the faces of people around her. A happy and lively person is more social, intellectual and creative.

Aparajita Kumari
BA (Prog) 1st Yea

Anjali Tiwari (B.Com. Prog. 1st Year)

Punpreet Kaur (BA Prog. 1st Year)

Saloni Parcha (BA Prog. 1st Year)

Anjali Tiwari (B.Com. Prog. 1st Year)

Juveria (BA Prog. 1st Year)

Saloni Parcha (BA Prog. 1st Year)

ਪੰਜਾਬੀ ਭਾਗ

ਮਾਂ ਬੋਲੀ

ਜੋ ਵਗਦੀ ਵਿਚ ਹਵਾਵਾਂ ਦੇ
ਜੋ ਸਰਹੱਦਾਂ ਤੋਂ ਉਚੀ ਏ,
ਫ਼ਕੀਰਾਂ ਦੇ ਹੱਥਾਂ ਵਿਚ ਆਈ
ਤਾਸੀਰ ਦੀ ਬਹੁਤੀ ਚੰਗੀ ਏ।
ਇਹ ਬੋਲੀ ਬਾਬੇ ਨਾਨਕ ਦੀ
ਕਰ ਉਜਾਲ ਰਾਹ ਵਿਖਾਉਂਦੀ ਏ,
ਪਹਿਲਾਂ ਅੱਖਰ ਮਾਂ ਬੋਲਣਾ
ਪੰਜਾਬੀ ਹੀ ਤਾਂ ਸਿਖਾਉਂਦੀ ਏ।
ਮਾਂ ਆਪਣੀ ਖ਼ਤਰਾਂ ਹੇਠ
ਇਸ ਦੌਰ 'ਚ ਅਸਾਂ ਬਚਾਉਣੀ ਏ,
ਅਸੀਂ ਸਾਰਿਆਂ ਨੇ ਰਲ ਕੇ ਹੀ ਤਾਂ
ਸ਼ਾਨ ਇਹਦੀ ਵਧਾਉਣੀ ਏ
ਤੇ ਮਾਂ ਬੋਲੀ ਦੀ ਪਹਿਚਾਣ
ਸਿਖਰਾਂ ਤੱਕ ਪਹੁੰਚਾਉਣੀ ਏ।
ਜੇ ਬਹੁਤਾ ਸਮਾਂ ਅਸੀਂ
ਇੱਧਰ-ਉੱਧਰ ਦੀਆਂ ਗੱਲਾਂ ਵਿਚ ਲਗਾਵਾਂਗੇ,
ਮਾਂ ਬੋਲੀ ਦੀ ਹੋਂਦ ਅਸੀਂ
ਇਸ ਜੰਗ ਵਿਚੋਂ ਗਵਾਵਾਂਗੇ।
ਫਿਰ ਚਾਅ ਕੇ ਵੀ
ਅਸੀਂ ਰੋ ਨਾ ਪਾਵਾਂਗੇ,
ਤੇ ਇਹਦੇ ਸਵਾਲਾਂ ਮੂਹਰੇ
ਖੜ੍ਹੇ ਨਾ ਪਾਵਾਂਗੇ।
ਜਿੰਨ੍ਹੇ ਅਹਿਸਾਨ ਨੇ ਇਹਦੇ ਸਾਡੇ ਤੇ
ਕਦੇ ਵੀ ਭੁੱਲ ਨਾ ਪਾਵਾਂਗੇ,
ਜੇ ਇੱਕ ਵਾਰ ਗਵਾ ਲਈ ਹੋਵੇ
ਮਾਂ ਬੋਲੀ ਦਾ ਮੁੱਲ ਕਿਵੇਂ ਚੁਕਾਵਾਂਗੇ?

ਨਮਨਪ੍ਰੀਤ ਕੌਰ
ਬੀਏ (ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ) ਸਾਲ ਦੂਜਾ

ਪਵਣੁ ਗੁਰੂ ਪਾਣੀ ਪਿਤਾ

ਪਾਣੀ ਦੇ ਵਿਚ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਵਸੀ
ਕੁਦਰਤ ਦੇ ਵਿਚ ਪਾਣੀ
ਇਸ ਪਾਣੀ ਨੇ ਸਭ ਕੁਝ ਦਿੱਤਾ
ਕਰਜ਼ਦਾਰ ਹਰ ਪ੍ਰਾਣੀ
ਪਵਣੁ ਗੁਰੂ ਪਾਣੀ ਪਿਤਾ
ਲਿਖਿਆ ਵਿਚ ਗੁਰਬਾਣੀ
ਖ਼ਿਆਲ ਕਰੋ ਇਸ ਸੋਹਣੇ ਜਲ ਦਾ
ਆਪਾਂ ਸਾਰੇ ਨੀ ਜੀ ਸਕਦੇ ਬਿਨ ਪਾਣੀ

ਇਸ਼ਾ ਕਰਮਾ
ਬੀਏ (ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ) ਸਾਲ ਦੂਜਾ

ਮਾਂ

ਮਾਂ ਤੂੰ ਕਦੇ ਥੱਕਦੀ ਕਿਉਂ ਨਹੀਂ?
ਸਭ ਦਾ ਫ਼ਿਕਰ ਕਰਦੀ ਏ
ਆਪਣਾ ਖ਼ਿਆਲ ਰੱਖਦੀ ਕਿਉਂ ਨਹੀਂ?
ਮੈਂ ਤੈਨੂੰ ਕਦੇ ਚੈਨ ਦੀ ਨੀਂਦ ਸੌਂਦੇ ਨਹੀਂ ਵੇਖਿਆ
ਕਾਹਦੀ ਬਣੀ ਏ?
ਤੇਰੀ ਅੱਖ ਲੱਗਦੀ ਕਿਉਂ ਨਹੀਂ?
ਦਰ ਰਾਮ ਦਾ ਨਾ ਛੱਡਦੀ ਨਾ ਅੱਲ੍ਹਾ ਦਾ
ਕੀ ਮੰਗੇ ਤੂੰ ਦੱਸਦੀ ਕਿਉਂ ਨਹੀਂ?
ਬਿਨ ਦੱਸਿਆਂ ਮੇਰੀਆਂ ਪੀੜਾਂ ਕਿਵੇਂ ਬੁਝ ਲੈਂਦੀ ਏ?
ਕਿਹੜਾ ਇਲਮ ਏ ਇਹ
ਪਰਦਾ ਚੁੱਕਦੀ ਕਿਉਂ ਨਹੀਂ?
ਤੂੰ ਮੇਰੇ ਵੱਲ ਵੀ ਏ, ਤੂੰ ਉਹਦੇ ਵੱਲ ਵੀ ਏ
ਤੂੰ ਸਭ ਦੇ ਵੱਲ ਹੀ ਏ ਇਕ ਪੱਖ ਦੀ ਕਿਉਂ ਨਹੀਂ?
ਭਾਵੇਂ ਰੱਬ ਨੇ ਭੇਜਦੇ ਮੂੰਹ ਤੇ ਝੁਰੜੀਆਂ ਵੀ
ਚੰਗੀ ਮਾਂ ਤੋਂ ਵੱਧ ਸੋਹਣੀ ਕੋਈ ਲੱਗਦੀ ਕਿਉਂ ਨਹੀਂ?

ਤਾਨੀਆ
ਬੀਏ (ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ) ਸਾਲ ਤੀਜਾ

ਸਦਾ ਖੁਸ਼ਹਾਲ ਰਹੇ

ਮੇਰਾ ਪਿਆਰਾ ਭਾਰਤ ਦੇਸ਼ ਸਦਾ ਖੁਸ਼ਹਾਲ ਰਹੇ,
ਹੈ ਬਾਪੂ ਦਾ ਸੰਦੇਸ਼ ਸਦਾ ਖੁਸ਼ਹਾਲ ਰਹੇ।

ਗੰਗਾ, ਜਮੁਨਾ, ਸਰਸਵਤੀ ਪਾਵਨ ਨਦੀਆਂ ਵਹਿਣ,
ਨਾਨਕ, ਰਾਮ, ਕ੍ਰਿਸ਼ਨ ਦੀ ਧਰਤੀ ਥਾਂ-ਥਾਂ ਮੇਲੇ
ਲੱਗਣ

ਆਵੇ ਈਦ ਜਾਂ ਆਵੇ ਵਿਸਾਖੀ ਜਾਂ ਫਿਰ ਆਵੇ ਹੋਲੀ,
ਹਿੰਦੂ, ਮੁਸਲਿਮ, ਸਿੱਖ, ਈਸਾਈ ਮਨਾਉਂਦੇ ਰਲ ਕੇ
ਸਾਂਝੀ ਟੋਲੀ।

ਦਿਨ ਆਜ਼ਾਦੀ ਦਾ ਵੀ ਅਸੀਂ ਮਿਲ ਕੇ ਸਭ ਮਨਾਉਂਦੇ

ਵੱਡਿਆਂ ਦੇ ਨਾਲ ਬੱਚਿਆਂ ਦਾ ਵੀ ਅਸੀਂ ਸਦਾ ਹੀ ਮਾਣ ਵਧਾਉਂਦੇ।

ਜੋਤਕ ਕੌਰ
ਬੀਕਾਮ (ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ) ਸਾਲ ਦੂਜਾ

ਸੋਚ ਦੀ ਲਿਖਤ

ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਹੈ ਅਜੀਬ ਮਿੱਤਰੋ
ਰੱਬ ਹਮੇਸ਼ਾ ਹੀ ਕਰੀਬ ਮਿੱਤਰੋ
ਭਾਣਾ ਸਤਿਗੁਰ ਦਾ ਸਿਰ ਮੱਥੇ ਮੰਨਣਾ
ਇਹ ਜ਼ਰੂਰੀ ਹੈ ਤਰੀਕ ਮਿੱਤਰੋ
ਚੰਗੇ ਕੰਮ ਕਰੀਏ ਤਾਂ ਸਵਰਗਾਂ ਦੀ ਟਿਕਟ ਮਿਲਦੀ
ਇਹ ਪੱਕੀ ਹੈ ਰਸੀਦ ਮਿੱਤਰੋ
ਹਰ ਰੂਹ ਦੇ ਵਿੱਚ ਉਹ ਆਪ ਵਸਦਾ
ਕਦੇ ਤੰਗ ਨਾ ਕਰੋ ਗਰੀਬ ਮਿੱਤਰੋ
ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਹੈ ਅਜੀਬ ਮਿੱਤਰੋ
ਰੱਬ ਹਮੇਸ਼ਾ ਹੀ ਕਰੀਬ ਮਿੱਤਰੋ।

ਅਨੁਰੀਤ ਕੌਰ
ਬੀਕਾਮ (ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ) ਸਾਲ ਦੂਜਾ

ਹਿੰਮਤ

ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਲੱਖ ਸਤਾਵੇ ਚਾਹੇ ਤੁਹਾਨੂੰ,
ਪਰ ਹਿੰਮਤ ਕਮਜ਼ੋਰ ਹੋਣ ਨਾ ਦੇਣਾ।
ਕਿਸਮਤ ਕਰੇ ਲੱਖਾਂ ਸਿਤਮ,
ਪਰ ਹਿੰਮਤ ਆਪਣੀ ਖੋਹਣ ਨਾ ਦੇਣਾ।
ਸੰਘਰਸ਼ ਕਰਨਾ ਆਧਾਰ ਜੀਵਨ ਦਾ,
ਡਰ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਉੱਤੇ ਹਾਵੀ ਹੋਣ ਨਾ ਦੇਣਾ।
ਮੰਨਿਆ ਮੁਸ਼ਕਲ ਹਨ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਦੇ ਰਸਤੇ,
ਪਰ ਅੱਖ ਤੋਂ ਮੰਜ਼ਿਲ ਓਹਲੇ ਹੋਣ ਨਾ ਦੇਣਾ।
ਹਰ ਕਦਮ ਤੇ ਹੋਵੇਗਾ ਵਿਰੋਧ ਤੁਹਾਡਾ,
ਹੋਸ਼ ਕਦੇ ਵੀ ਖੋਹਣ ਨਾ ਦੇਣਾ।
ਡਰਾਵੇਗਾ ਇਹ ਸੰਸਾਰ ਹਰ ਤਰ੍ਹਾਂ ਨਾਲ,
ਪਰ ਕਦਮਾਂ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਰੋਕ ਨਾ ਦੇਣਾ।
ਹਿੰਮਤ ਕਮਜ਼ੋਰ ਹੋਣ ਨਾ ਦੇਣਾ।
ਹਿੰਮਤ ਕਮਜ਼ੋਰ ਹੋਣ ਨਾ ਦੇਣਾ।

ਭਾਵਨਾ
ਬੀਏ (ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ) ਸਾਲ ਤੀਜਾ

ਪੁੱਤ ਤੇ ਧੀਆਂ

ਜੇ ਪੁੱਤ ਹੱਟਾਂ ਤੇ ਨਹੀਂ ਵਿਕਦੇ
ਨਾ ਧੀਆਂ ਵਿਕਣ ਬਜ਼ਾਰ ਕੁੜੇ,
ਇਹ ਸੌਦਾ ਮੁੱਲ ਲੈਂਦਾ ਨੀ
ਨਕਦ ਨਾ ਮਿਲੇ ਉਧਾਰ ਕੁੜੇ
ਜੇ ਪੁੱਤ ਹੱਟਾਂ ਤੇ ਨਹੀਂ ਵਿਕਦੇ ਨਾ ਧੀਆਂ ਵਿਕਣ
ਬਜ਼ਾਰ ਕੁੜੇ।
ਜੇ ਪੁੱਤ ਘਰਾਂ ਦੀ ਆਨ ਨੀ
ਤਾਂ ਧੀਆਂ ਮਾਪਿਆਂ ਦੀ ਸ਼ਾਨ ਨੀ,
ਰੌਣਕ ਬਾਬੁਲ ਦੇ ਵਿਹੜੇ ਦੀ
ਸੁੱਖ ਮੰਗਦੀਆਂ ਧੀਆਂ ਮਾਂ ਦੀ ਨੀ
ਕਿਉਂ ਹੋਇਆ ਵੈਰ ਕਸੂਰਾਂ ਦੀ
ਸਮਾਜ ਜਾਤੇ ਦਾ ਇਹ ਕਿਹੜਾ ਕਿਰਦਾਰ ਕੁੜੇ
ਜੇ ਪੁੱਤ ਹੱਟਾਂ ਤੇ ਨਹੀਂ ਵਿਕਦੇ ਨਾ ਧੀਆਂ ਵਿਕਣ
ਬਜ਼ਾਰ ਕੁੜੇ।
ਪੁੱਤਰਾਂ ਸੰਗ ਵੇਲ ਜੇ ਵਧਦੀ ਏ
ਧੀਆਂ ਸੰਗ ਫਲਦੀ ਫੁੱਲਦੀ ਏ,
ਲਾਡਾਂ ਨਾਲ ਵੀਰ ਖਿਡਾਉਂਦੀ ਏ
ਬੁਲਬੁਲਾਂ ਵਾਂਗ ਪਲਦੀ ਏ
ਉਹ ਕਿਰਤੂਰ ਬਾਗ ਸਲਾਮਤ ਨੀ
ਜਿਹਦੀ ਖੁਸ਼ਬੂ ਬੜੀ ਸੁਹਾਣ ਕੁੜੇ
ਜੇ ਪੁੱਤ ਹੱਟਾਂ ਤੇ ਨਹੀਂ ਵਿਕਦੇ ਨਾ ਧੀਆਂ ਵਿਕਣ
ਬਜ਼ਾਰ ਕੁੜੇ।

ਆਸਥਾ ਭੱਲਾ
ਬੀਏ (ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ) ਸਾਲ ਤੀਜਾ

ਇੰਤਜ਼ਾਰ

ਉਹ ਹਰ ਪਾਸੇ ਮੈਨੂੰ ਦਿਸਦਾ ਏ।
ਮੇਰੇ ਸੁਫ਼ਨਿਆਂ ਵਿਚ ਆਉਂਦਾ ਏ।
ਨਾ ਜਾਣੇ ਮੈਨੂੰ ਕੀ ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਏ ਉਹਨੂੰ ਦੇਖ ਕੇ।
ਮੈਂ ਕਾਹਤੋਂ ਸ਼ਰਮਾ ਜਾਂਦੀ ਆਂ?
ਮੈਂ ਨਹੀਂ ਜਾਣਦੀ ਮੈਂ ਉਹਦਾ ਇੰਤਜ਼ਾਰ ਕਾਹਤੋਂ ਕਰਦੀ ਆਂ?
ਪਰ ਹਾਂ ਮੈਂ ਇੰਤਜ਼ਾਰ ਕਰਦੀ ਆਂ।
ਉਹ ਕੀ ਲੱਗਦਾ ਏ ਮੇਰਾ ਮੈਂ ਨਹੀਂ ਜਾਣਦੀ,
ਪਰ ਉਹਦੀ ਅੱਖਾਂ 'ਚ ਮੈਨੂੰ ਮੇਰੀ ਦੁਨੀਆਂ ਦਿਸਦੀ ਏ।

ਤੇ ਇਹ ਉਹੀ ਏ ਜਿਹਨੂੰ ਮਾਪੇ ਪਸੰਦ ਕਰਨਗੇ?
ਮੈਂ ਨਹੀਂ ਜਾਣਦੀ,
ਮੈਂ ਉਹਦਾ ਇੰਤਜ਼ਾਰ ਕਿਉਂ ਕਰਦੀ ਆਂ?
ਪਰ ਹਾਂ ਮੈਂ ਇੰਤਜ਼ਾਰ ਕਰਦੀ ਆਂ।
ਨਿਰੰਤਰ॥
ਅੱਜ ਮੈਂ ਮੰਗੀ ਗਈ ਆਂ
ਮੈਂ ਨਹੀਂ ਜਾਣਦੀ ਉਹ ਕੌਣ ਏ,
ਕਿਹੋ ਜਿਹਾ ਦਿਸਦਾ ਹੋਵੇਗਾ,
ਉਹਨੂੰ ਮੇਰੇ ਮਾਪਿਆਂ ਨੇ ਲੱਭਿਆ ਏ
ਅੱਜ ਮੇਰੇ ਹੱਥਾਂ ਵਿਚ ਲਾਲ ਚੂੜਾ, ਲਾਲ ਸੂਹਾ ਜੋੜਾ
ਹੱਥੀਂ ਕਲੀਰੇ, ਕੰਨੀਂ ਝੁਮਕੇ, ਪੈਰੀਂ ਝਾਂਜਰਾਂ,
ਅਣਜਾਣ ਨੂੰ ਬੁੱਲਟ ਦੀ ਹਰ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਰੋਮਾਂਚਕ
ਕਿਉਂ ਅੱਜ ਵੀ ਏ ਉਹਦਾ ਇੰਤਜ਼ਾਰ?
ਇਹ ਮੇਰੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਦਾ ਖ਼ੂਬਸੂਰਤ ਸੱਚ ਏ,
ਮੇਰਾ ਹੋਣ ਵਾਲਾ ਉਹੀ ਏ,
ਜੀਹਦੀ ਉਡੀਕ ਸੀ,
ਉਹੀ ਅੱਜ ਮਾਪਿਆਂ ਮੇਰੇ ਲੜ ਲਾ ਦਿੱਤਾ
ਮਾਪੇ ਮਾਪੇ ਹੀ ਹੁੰਦੇ ਨੇ
ਰੱਬ ਦਾ ਰੂਪ

ਹਰਪ੍ਰੀਤ ਕੌਰ
ਬੀਏ (ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ) ਸਾਲ ਤੀਜਾ

ਨੂਰ ਨਾਨਕ

ਨਹੀਂ ਵਿਚ ਬੰਦ ਮੰਦਿਰਾਂ, ਮਸਜਿਦ, ਧਰਮਸ਼ਾਲਾਂ,
ਹਰ ਮਕਾਨ ਅੰਦਰ ਲਾਮਕਾਨ ਸਮਝੇ।
ਰੂਪ ਰੰਗ ਉਹਦਾ ਵਰਨ ਚਿਹਨ ਕੋਈ ਨਾ
ਰੰਗਾਂ ਸਾਰਿਆਂ ਵਿਚ ਵਰਤਮਾਨ ਸਮਝੇ।
ਨਾਤਾ, ਦੋਸਤੀ, ਸਾਕ, ਸਰੀਕਤਾ ਨਹੀਂ
ਸਭ ਤੋਂ ਵੱਖਰਾ ਸਭਸ ਦੀ ਜਾਨ ਸਮਝੇ।
ਦੇਸ਼, ਜਾਤ, ਮਜ਼ਹਬ, ਪੇਸ਼ਾ, ਖ਼ਿਆਲ ਕੋਈ
ਹਰ ਇਨਸਾਨ ਦੇ ਤਾਈਂ ਇਨਸਾਨ ਸਮਝੇ।

ਜਾਣੋ ਸਭਸ ਵਿਚ ਜੋਤ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦੀ
ਪਹਿਲਾਂ ਦੱਸਿਆ ਇਹੋ ਦਸਤੂਰ ਨਾਨਕ।
ਸ਼ਰਧਾ ਨਾਲ ਪਾਇਆ ਸੁਰਮਾ ਏਕਤਾ ਦਾ
ਸਭਨਾਂ ਅੱਖੀਆਂ ਵਿਚ ਦਿੱਤੇ ਨੂਰ ਨਾਨਕ।
ਸਮਝਣ ਵਾਲਿਆਂ ਨੇ ਖ਼ੂਬ ਸਮਝ ਲੈਣਾ
ਭਾਵੇਂ ਮੋਹਨ ਕਹਿ ਲੈ, ਭਾਵੇਂ ਸ਼ਾਮ ਕਹਿ ਲੈ।

ਨੀਅਤ ਵਿਚ ਜੇ ਭਾਵ ਹੈ ਪਿਆਰ ਵਾਲਾ
ਫ਼ਤਹਿ, ਬੰਦਗੀ, ਨਮਸਤੇ, ਸਲਾਮ ਕਹਿ ਲੈ।
ਨਾਮਾਂ ਸਾਰਿਆਂ ਵਿਚ ਉਹਦਾ ਨਾਮ ਕੋਈ ਨਹੀਂ
ਦਿਲੋਂ ਲਈ ਉਹਦਾ ਕੋਈ ਨਾਮ ਕਹਿ ਲੈ।
ਸਭਨਾਂ ਬੋਲੀਆਂ ਤਾਈਂ ਉਹ ਜਾਣਦਾ ਏ
ਭਾਵੇਂ ਰੱਬ ਅੱਲਾ ਭਾਵੇਂ ਰਾਮ ਕਹਿ ਲੈ।

ਐਸੇ ਪ੍ਰੇਮ ਦੇ ਰੰਗ ਵਿਚ ਰੰਗਿਆ ਜੋ
ਉਹਨੇ ਸਮਝਿਆ ਠੀਕ ਜ਼ਰੂਰ ਨਾਨਕ।
ਅੰਦਰ ਬਾਹਰ ਉਹਨੂੰ ਨਜ਼ਰੀਂ ਪਿਆ ਆਵੇ
ਨੂਰ ਨੂਰ ਨਾਨਕ, ਨੂਰ ਨੂਰ ਨਾਨਕ।
ਰਿਸ਼ਤਾ ਬੰਦਿਆਂ ਦਾ ਪਹਿਲੋਂ ਠੀਕ ਹੁੰਦਾ
ਮਿਲਦਾ ਰੱਬ ਜੋ ਘਰ ਬਾਹਰ ਬੰਦਿਆਂ ਵਿਚ।
ਪੰਡਤਾਂ, ਕਾਜ਼ੀਆਂ, ਭਾਈਆਂ ਦਾ ਮਸਲਾ ਜੋ
ਰੱਬ ਵੰਡਿਆ ਇੱਟਾਂ ਤੇ ਮੰਦਰਾਂ ਵਿਚ।
ਇਹ ਵੀ ਸਿੱਖਿਆ ਜੋ ਕਿਤੇ ਨਾ ਸਮਝ ਲੈਣਾ
ਉਹ ਹੀ ਪਾਇਆ ਦੂਜਾਂ ਜਾਂ ਪੰਦਰਾਂ ਵਿਚ।
ਨੀਵਾਂ ਸਿਰ ਕਰਕੇ ਮਾਰੇ ਝਾਤ ਜੇਹੜਾ
ਉਹਨੂੰ ਦਿਸੇਗਾ ਸਾਰਿਆਂ ਅੰਦਰਾਂ ਵਿਚ।

ਘਰੇ ਆਪਣੇ ਰਹਿਣ ਲਈ ਥਾਂ ਉਹਨੇ
ਐਸੇ ਗਿਆਨ ਦੇ ਨਾਲ ਭਰਪੂਰ ਨਾਨਕ।
ਨਾਨਕ ਓਸ ਵਿਚ ਹੈ, ਉਹ ਹੈ ਵਿਚ ਨਾਨਕ
ਓਸੇ ਨੂਰ ਤੋਂ ਨੂਰ ਇਹ ਨੂਰ ਨਾਨਕ।
ਆ ਕੇ ਨਜ਼ਰ ਵੀ ਆਉਂਦਾ ਨਜ਼ਰ ਨਹੀਂ
ਕਿੱਸਾ ਜਾਣ ਲੈ ਮੂਸਾ ਤੇ ਤੂਰ ਦਾ ਏ।
ਆਪਣੇ ਆਪ ਨੂੰ ਆਪ ਨੇ ਹੀ ਮਿਲਣਾ
ਪੈਂਡਾ ਬਹੁਤ ਨੇੜੇ ਫਿਰ ਵੀ ਦੂਰ ਦਾ ਏ।
ਪਰਦਾ ਸਾਫ਼ ਕੇ ਵੀ ਕਿਹਾ ਵਿਚ ਪਰਦੇ
ਆਇਆ ਨੂਰ ਉੱਤੇ ਪਰਦਾ ਨੂਰ ਦਾ ਏ।
ਜਿਵੇਂ ਮਿਲਣ ਜੋੜੇ ਕੇਵਲ ਦਿਲਾਂ ਵਾਲੇ
ਓਵੇਂ ਕੰਮ ਵੀ ਅਕਲ ਸਹੂਰ ਦਾ ਏ।

ਮਿਲੀਏ ਜਿਨਸ ਵਿਚ ਸਦਾ ਹਮ ਜਿਨਸ ਹੋ ਕੇ
ਇਹ ਸਿਧਾਂਤ ਜੋ ਸਿਰਫ਼ ਮਨਜ਼ੂਰ ਨਾਨਕ।
ਬੂੰਦ ਵਿਚ ਸਾਗਰ, ਸਾਗਰ ਵਿਚ ਬੂੰਦਾਂ
ਰਲਿਆ ਨੂਰ ਹੈ ਕੇ ਅੰਦਰ ਨੂਰ ਨਾਨਕ।

ਸਿਮਰਨ ਕੌਰ
ਬੀਏ (ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ) ਸਾਲ ਪਹਿਲਾ

ਸੂਰਮੇ ਦੀ ਮੌਤ

ਆਸ਼ਕ ਦੀ ਮੌਤ ਨਾਲੋ ਸੂਰਮੇ ਦੀ ਮੌਤ ਚੰਗੀ,
ਖੂਨ ਜੇ ਨਿਕਲ ਜਾਣ ਵਿੱਚ ਜੋ ਮੈਦਾਨ ਦੇ,
ਆਸ਼ਕ ਦਾ ਇਸ਼ਕ ਜੇਕਰ ਸਿਰੇ ਨਾ ਲੱਗਾ ਪਵੇ,
ਫਾੜੀ ਨਹੀਂ ਮਿਲਦੀ ਫਿਰ ਦੋਨਾਂ ਨੂੰ ਵੀ ਜਹਾਨ ਤੇ,
ਸੂਰਮੇ ਦਾ ਪਿਆਰ ਰਣ ਵਿੱਚ ਹਥਿਆਰ ਨਾਲ,
ਵੀਰਗਤੀ ਪਾ ਕੇ ਬਣ ਜਾਂਵਦਾ ਮਹਾਨ ਜੋ,
ਇਸ਼ਕ ਦੀ ਚਿੰਗਾੜ ਬਹੁਤ ਲੰਬੀ ਹੁੰਦੀ ਅਵਨੀਤ ਕੌਰੇ,
ਐਵੇਂ ਨਾ ਖੁਆਰ ਹੁੰਦੇ ਇਸ਼ਕ ਵਿਚ ਜਹਾਨ ਤੇ,
ਇਸ਼ਕ ਤੜਫਾਉਂਦਾ ਹੈ ਰਾਤਾਂ ਦੀਆਂ ਨੀਂਦਾਂ ਵਿੱਚ,
ਸੂਰਮੇ ਦੀ ਤੜਫ ਕੇਵਲ ਰਹਿੰਦੀ ਹੈ ਮੈਦਾਨ ਚ,
ਇਸ਼ਕ ਵਿੱਚ ਆਸ਼ਕ ਕਈ ਜਾਨਾਂ ਪਏ ਨੇ ਵਾਰਦੇ,
ਕੋਈ ਵਿਰਲਾ ਹੀ ਮਰਦਾ ਹੈ ਰਣ ਵਿੱਚ ਮੈਦਾਨ ਦੇ,
ਇਸ਼ਕ ਵਿੱਚ ਹਾਰਨ ਤੇ ਰਾਤੀਂ ਅੱਤੇ ਖੌਤ ਜਾਵੇ,
ਪਰ, ਵੀਰਤਾ ਹੀ ਮਿਲੇ ਜੇ ਜਾਵੇ ਸੂਰਮਾ ਜਹਾਨ ਚੋਂ,
ਇਸ਼ਕ ਵਿੱਚ ਭੁਲਿਆ ਜਮਾਨਾ ਕੋਈ ਦੇਖਦਾ ਨਹੀਂ,
ਮੇਲੇ ਨਿਤ ਲੱਗਦੇ ਨੇ ਸੂਰਮਿਆਂ ਦੀ ਸ਼ਾਨ ਤੇ।

ਅਵਨੀਤ ਕੌਰ
ਬੀਏ (ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ) ਸਾਲ ਦੂਜਾ

ਅਜੋਕੀ ਰਾਜਨੀਤੀ ਜਾਂ ਅੱਜ ਦੀ ਰਾਜਨੀਤੀ

ਅੱਜ ਜਿਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਨਾਲ ਸਾਡੇ ਨੇਤਾ ਇਮਾਨਦਾਰ ਅਫ਼ਸਰਾਂ ਤੇ ਸੈਨਿਕਾਂ ਬਾਰੇ ਗੱਲ ਕਰ ਰਹੇ ਹਨ, ਉਹ ਬਹੁਤ ਜਿਆਦਾ ਨਿੰਦਾ ਦੇ ਯੋਗ ਹੈ। ਵਰਤਮਾਨ ਯੁੱਗ ਲੋਕਤੰਤਰ ਦਾ ਯੁੱਗ ਹੈ। ਲੋਕ-ਤੰਤਰ ਦਾ ਮੂਲ ਸਿਧਾਂਤ ਤਾਂ ਲੋਕਾਂ ਵਲੋਂ ਲੋਕਾਂ ਲਈ, ਲੋਕਾਂ ਦਾ ਰਾਜ ਹੈ। ਚੋਣਾਂ ਸਮੇਂ ਵੋਟ ਲੈਣ ਲਈ ਜਨਤਾ ਨਾਲ ਤਰ੍ਹਾਂ- ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੇ ਵਾਅਦੇ ਕੀਤੇ ਜਾਂਦੇ ਹਨ ਪਰ ਸੱਤਾ ਵਿੱਚ ਆਉਂਦੇ ਹੀ ਸਭ ਵਾਅਦੇ ਭੁਲਾ ਦਿੱਤੇ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ਮੰਤਰੀ ਆਪਣੇ ਘਰ ਭਰਨ ਲੱਗ ਜਾਂਦੇ ਹਨ ਸੱਤਾ ਕਾਇਮ ਰੱਖਣ ਲਈ ਲੋਕਾਂ ਵਿੱਚ ਧਰਮ, ਜਾਤ ਤੇ ਹੋਰ ਕਈ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੇ ਮਸਲੇ ਖੜੇ ਕਰਕੇ ਪਾੜ ਪਾਏ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ਹਰ ਨਵਾਂ ਪ੍ਰੋਜੈਕਟ ਦੀ ਸ਼ੁਰੂਆਤ ਧਾਰਮਿਕ ਮੰਤਰਾਂ ਨਾਲ ਕੀਤੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਰਾਜਨੀਤੀ ਧਰਮ ਸੱਤਾ ਦੀ ਖੇਡ ਹੈ ਤੇ ਦਲ ਬਲ ਤੇ ਆਧਾਰਿਤ ਹੁੰਦੀ ਹੈ ਪਰ ਸ਼ਾਸਕ ਸੱਤਾ ਦੇ ਨਸ਼ੇ ਵਿੱਚ ਵਿਰਕਸੇਦਾਰ ਕਬੂਲ ਕਰਨ ਲਈ ਤਿਆਰ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦੇ। ਉਹ ਆਪਣੀ ਸੱਤਾ ਕਾਇਮ ਰੱਖਣ ਲਈ ਸਾਰੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੇ ਹੱਥ ਕੰਡੇ ਅਪਣਾਉਂਦੇ ਹਨ।

ਅੱਜ ਦੇ ਯੁੱਗ ਵਿੱਚ ਲੋੜ ਹੈ ਇਮਾਨਦਾਰ ਅਫ਼ਸਰਾਂ, ਕਰਮਚਾਰੀਆਂ ਅਤੇ ਦੇਸ਼ ਭਗਤ ਸੈਨਿਕਾਂ ਦੀ। ਪਰ ਸਾਡੇ ਦੇਸ਼ ਦੇ ਨੇਤਾ ਭ੍ਰਿਸ਼ਟਾਚਾਰ ਵਿੱਚ ਡੁੱਬੇ ਹੋਏ ਹਨ। ਜੇ ਇਹੀ ਹਾਲ ਰਿਹਾ ਤਾਂ ਅੰਦਰੂਨੀ ਕਲਿਹ (ਲੜਾਈਆਂ) ਦੇ ਕਾਰਨ ਚੀਨ ਤੇ ਪਾਕਿਸਤਾਨ ਆਪਣੇ ਸ਼ੜਯੰਤਰ ਵਿੱਚ ਸਫਲ ਹੋ ਕੇ ਸਾਡੇ ਦੇਸ਼ ਵਿੱਚ ਅਸ਼ਾਂਤੀ ਫੈਲਾ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਜਿਸ ਦਾ ਸਿੱਟਾ ਇਹ ਹੋਵੇਗਾ ਕਿ ਦੇਸ਼ ਦਾ ਵਿਕਾਸ ਰੁਕ ਜਾਵੇਗਾ। ਅੱਜ ਸਾਡਾ ਰੁਪਇਆ ਡਾਲਰ ਦੇ ਮੁਕਾਬਲੇ ਕਾਫ਼ੀ ਕਮਜ਼ੋਰ ਹੋ ਗਿਆ ਹੈ। ਜਦਕਿ ਸਾਡੇ ਨੇਤਾ ਗਰੀਬੀ ਦੇ ਸੱਚੇ-ਝੂਠੇ ਅੰਕੜੇ ਪੇਸ਼ ਕਰ ਰਹੇ ਹਨ ਹੋਰ ਅਲਪ ਸੰਖਿਅਕਾਂ ਦੇ ਨਾਂ ਤੇ ਰਾਜਨੀਤੀ ਕਰ ਰਹੇ ਹਨ। ਇਕ ਗਠਬੰਧਨ ਸੱਤਾ ਬਚਾਉਣ ਵਿੱਚ ਲੱਗਾ ਹੋਇਆ ਹੈ ਤੇ ਦੂਸਰਾ ਸੱਤਾ ਹਾਸਿਲ ਕਰਨ ਵਿੱਚ ਪਰ ਕਿਸੇ ਕੋਲ ਜਨਤਾ ਤੇ ਦੇਸ਼ ਦੇ ਹਿੱਤਾਂ ਲਈ ਕੋਈ ਨੀਤੀ ਨਹੀਂ ਹੈ। ਇਹੀ ਹਾਲ ਰਿਹਾ ਤਾਂ ਸਾਡੇ ਦੇਸ਼ ਵਿੱਚ ਬਹੁਤ ਜਿਆਦਾ ਸੰਕਟ ਪੈਦਾ ਹੋ ਜਾਵੇਗਾ।

ਡਾ. ਜਸਪ੍ਰੀਤ ਕੌਰ ਮਾਨ
ਗੈਸਟ ਫੈਕਲਟੀ, ਪੰਜਾਬੀ

ਅਸਲੀ ਸੋਚ

ਅਮੀਰ ਮਾਂ-ਬਾਪ ਦੀ ਇਕਲੌਤੀ ਕੁੜੀ ਸੀ ਜਿਸ ਦੀ ਸਾਧਾਰਨ ਸੂਰਤ ਹੋਣ ਕਰਨ ਉਹ ਆਪਣੇ ਆਪ ਨੂੰ ਸੋਹਣੀ ਦਰਸਾਉਣਾ ਚਾਹੁੰਦੀ ਸੀ ਤੇ ਅੱਜ ਉਸ ਨੇ ਸੋਹਣੀ ਦਿਸਣ ਲਈ ਪੂਰੀ ਵਾਹ ਲਾ ਦਿੱਤੀ। ਉਸ ਦੇ ਚਮਚਿਆਂ ਨੇ ਉਸ ਦੇ ਰੂਪ ਦੀ ਤਾਰੀਫ਼ ਕੀਤੀ। ਕਿਸੇ - ਕਿਸੇ ਨੇ ਤਾਂ ਉਸ ਨੂੰ ਪਰੀ ਵੀ ਕਿਹਾ ਅੰਤ ਉਸ ਨੇ ਸਭ ਪਾਸਿਆਂ ਤੋਂ ਤਾਰੀਫ਼ ਹੁੰਦੀ ਵੇਖਕੇ ਆਪਣੇ ਆਪ ਨੂੰ ਸ਼ੀਸ਼ੇ ਵੱਲ ਵੇਖਣਾ ਚਾਹਿਆ ਪਰ ਸ਼ੀਸ਼ਾ ਆਪਣੀ ਆਦਤ ਅਨੁਸਾਰ ਅੱਜ ਵੀ ਸੱਚ ਵਿਖਾ ਰਿਹਾ ਸੀ। ਉਹ ਤਾਂ ਇਕ ਸਾਧਾਰਨ ਕੁੜੀ ਲੱਗ ਰਹੀ ਸੀ।

ਇਹ ਗੱਲ ਉਸ ਨੂੰ ਹਜ਼ਮ ਨਹੀਂ ਹੋਈ। ਉਸ ਨੇ ਗੁੱਸੇ ਚ ਆ ਕੇ ਸ਼ੀਸ਼ੇ ਨੂੰ ਕੰਧ ਨਾਲ ਮਾਰ ਦਿੱਤਾ। ਉਸ ਦੀ ਹੈਰਾਨੀ ਦੀ ਕੋਈ ਸੀਮਾ ਨਾ ਰਹੀ ਜਦ ਉਸ ਨੇ ਵੇਖਿਆ

ਕਿ ਧਰਤੀ ਉੱਤੇ ਪਇਆ ਇਕੱਲਾ-ਇਕੱਲਾ ਸ਼ੀਸ਼ੇ ਦਾ ਟੁਕੜਾ ਮੁਸਕੁਰਾਕੇ ਕਹਿ ਰਿਹਾ ਸੀ, ਜੀ ਮੈਂ ਲੱਖ ਵਿਖਾਉਣ ਦਾ ਸਮਰੱਥ ਤਾਂ ਅਜੇ ਵੀ ਹਾਂ।

ਸਿਮਰਨ ਕੌਰ
ਬੀਏ (ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ) ਸਾਲ ਪਹਿਲਾ

ਅਹਿਮੀਅਤ

ਅਹਿਮੀਅਤ, ਇਕ ਸ਼ਬਦ ਹੈ,ਮਗਰ ਇਸ ਦਾ ਅਰਥ ਕਾਫ਼ੀ ਗਹਿਰਾ, ਕਿਸੇ ਦੀ ਅਹਿਮੀਅਤ ਸਮਝਣ ਲਈ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਸਾਰੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਲੱਗ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਇਸ ਜ਼ਿੰਦਗੀ 'ਚ ਹਰ ਇਕ ਚੀਜ਼ ਦੀ ਅਹਿਮੀਅਤ ਹੈ, ਜਿਵੇਂ ਇਕ ਨਿਆਣਾ ਬੱਸ ਖੇਡ 'ਚ ਖ਼ੁਸ਼ ਰਹਿੰਦਾ ਤੇ ਤਦ ਬਚਪਨ ਕਿੰਨਾ ਸੋਹਣਾ ਹੁੰਦਾ ਹੈ, ਨਾ ਕੋਈ ਫ਼ਿਕਰ ਨਾ ਕੋਈ ਸੋਚਣੀ, ਮਗਰ ਇਕ ਛੋਟੇ ਜਿਹੇ ਨਿਆਣੇ ਨੂੰ ਉਹਦੇ ਬਚਪਨ ਦੀ ਅਹਿਮੀਅਤ ਨਹੀਂ ਪਤਾ। ਜਦ ਉਹ ਵੱਡਾ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਤੇ ਯਾਦ ਕਰਦਾ ਹੈ, ਤਦ ਉਹਨੂੰ ਆਪਣੇ ਬਚਪਨ ਦੀ ਅਹਿਮੀਅਤ ਦਾ ਅਹਿਸਾਸ ਹੁੰਦਾ ਹੈ, ਕਿ ਕਾਸ਼ ਆਪਣੇ ਬਚਪਨ ਦੇ ਦਿਨਾਂ 'ਚ ਮੁੜ ਸਕਦਾ। ਕਦੇ ਇਨਸਾਨ ਆਪਣੀ ਜਵਾਨੀ ਗ਼ਲਤ ਕੰਮਾਂ ਵਿੱਚ ਹੀ ਬਰਬਾਦ ਕਰ ਦਿੰਦਾ ਹੈ ਪਰ ਬਾਅਦ ਵਿਚ ਉਹਨੂੰ ਆਪਣੀ ਜਵਾਨੀ ਦੀ ਅਹਿਮੀਅਤ ਪਤਾ ਲਗਦੀ ਹੈ।

ਕਦੇ ਕਦੇ ਬੇਸ਼ਕੀਮਤੀ ਚੀਜ਼ਾਂ ਸਾਡੇ ਕੋਲ ਹੁੰਦੀਆਂ ਮਗਰ ਫਿਰ ਵੀ ਅਸੀਂ ਸਿਰਫ਼ ਸ਼ਿਕਾਇਤ ਕਰਦੇ ਹਾਂ। ਕਦੇ-ਕਦੇ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਮਾਂ-ਬਾਪ ਦੀ ਵੀ ਕੋਈ ਅਹਿਮੀਅਤ ਨਹੀਂ ਪਤਾ ਹੁੰਦੀ ਪਰ ਜਦ ਉਹ ਸਾਡੇ ਕੋਲ ਨਹੀਂ ਰਹਿੰਦੇ ਤੇ ਸਾਨੂੰ ਫੇਰ ਪਤਾ ਲਗਦਾ ਕਿ ਉਹਨਾਂ ਤੋਂ ਬਿਨਾਂ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਕੁਝ ਵੀ ਨਹੀਂ। ਲੋਕੀਂ ਤੇ ਇਹੋ ਜਿਹੇ ਵੀ ਨੇ ਜੋ ਰੱਬ ਦੀ ਅਹਿਮੀਅਤ ਨੂੰ ਵੀ ਨਹੀਂ ਜਾਣਦੇ। ਉਹਨੂੰ ਵੀ ਬੁਰਾ ਭਲਾ ਕਹੀ ਜਾਂਦੇ ਨੇ। ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਨੇ ਸਾਨੂੰ ਏਨਾ ਸੋਹਣਾ ਜਨਮ ਦਿੱਤਾ, ਲੱਖਾਂ ਕਰੋੜਾਂ ਦਾ ਸਰੀਰ ਦਿੱਤਾ, ਰੁੱਖ ਦਿੱਤੇ, ਪਾਣੀ ਦਿੱਤਾ, ਹਵਾਵਾਂ ਦਿੱਤੀਆਂ, ਫੁੱਲ ਦਿੱਤੇ ਧਰਤੀ ਦਿੱਤੀ, ਰਿਸ਼ਤੇ ਦਿੱਤੇ। ਅਸੀਂ ਉਹਦੀ ਅਹਿਮੀਅਤ ਵੀ ਭੁੱਲ ਜਾਂਦੇ ਹਾਂ। ਮਗਰ ਇਨਸਾਨ ਹਰ ਚੀਜ਼ ਦੀ ਅਹਿਮੀਅਤ ਨੂੰ ਭੁੱਲ ਕੇ ਬੱਸ ਸ਼ਿਕਾਇਤ ਕਰ ਕੇ ਆਪਣੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਗੁਜ਼ਾਰ ਦਿੰਦਾ ਹੈ।

ਸਾਨੂੰ ਸਹੀ ਤਾਲੀਮ ਤੇ ਹਰ ਚੀਜ਼ ਤੇ ਹਰ ਬੰਦੇ ਦੀ ਅਹਿਮੀਅਤ ਨੂੰ ਸਮਝਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ, ਤਾਂ ਹੀ ਅਸੀਂ ਆਪਣੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਵਿਚ ਖ਼ੁਸ਼ ਰਹਿ ਪਾਵਾਂਗੇ।

ਮਨਪ੍ਰੀਤ ਕੌਰ
ਬੀਏ (ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ) ਸਾਲ ਦੂਜਾ

ਅਰਦਾਸ

ਸੱਜਣ ਸਿੰਘ ਮੰਜੇ ਤੇ ਪਿਆ-ਪਿਆ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਦੇ ਰਿਸ਼ਤੇ ਦੀ ਭਾਲ 'ਚ ਗੁਆਚਿਆ ਪਿਆ ਸੀ। ਖੇਤੋਂ ਆਏ ਉਸ ਨੂੰ ਹਜੇ ਥੋੜ੍ਹਾ ਟਾਈਮ ਹੀ ਹੋਇਆ ਸੀ ਕਿ ਪੁਲਿਸ ਦੇ ਛਾਪੇ ਦੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਚਿੱਟੇ ਚੋਲਿਆਂ ਵਾਲੇ ਪੰਜ ਛੇ ਦਗੜ-ਦਗੜ ਕਰਦੇ ਉਹਦੇ ਵਿਹੜੇ ਵਿੱਚ ਆ ਵੜਗੇ। ਇਕ ਵਾਰ ਤਾਂ ਸੱਜਣ ਸਿੰਘ ਡਰ ਹੀ ਗਿਆ ਤੇ ਘਬਰਾਕੇ ਮੰਜੇ ਤੋਂ ਉੱਠਿਆ। ਸੱਜਣ ਸਿੰਘ ਦੇ ਬੋਲਣ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਹੀ ਮੁਖੀ ਬਾਬੇ ਨੇ ਦੋਵੇਂ ਹੱਥ ਸਿਰ ਤੋਂ ਉਤਾਂਹ ਕਰਕੇ ਉੱਚੀ ਜਿਹਾ ਕਿਹਾ

ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜੀ ਕਾ ਖਾਲਸਾ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜੀ ਕੀ ਫ਼ਤਿਹ ਗੁਰਮੁਖੋ, ਏਨੇ ਨੂੰ ਸੱਜਣ ਸਿਹੁੰ ਨੂੰ ਸਮਝ ਆ ਗਈ ਸੀ ਕਿ ਬਾਬੇ ਕਿਉਂ ਅਰਦਾਸ ਦੀ ਲੋੜ ਵਿੱਚ ਖੜ੍ਹੇ ਹੋ ਗਏ। ਅਰਦਾਸ ਦੇ ਨਾਂ ਤੇ ਬਾਬੇ ਨੇ ਕਦੀ ਵਾਰੀ ਹੱਥ ਬੇਰੀ ਨੂੰ ਤੇ ਕਦੀ ਵਾਰੀ ਧਰਤੀ ਨੂੰ ਹੱਥ ਜਿਹੇ ਲਾਏ। ਸੱਜਣ ਸਿੰਘ ਇਹ ਸਭ ਡਰਾਮਾਂ ਵੇਖਣ ਲਈ ਮਜਬੂਰ ਖੜ੍ਹਾ ਸੀ। ਅਰਦਾਸ ਦੇ ਡਰਾਮੇ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਮੁਖੀ ਬਾਬਾ ਬੋਲਿਆ, ਲੈ ਭਾਈ ਕਰਮਾਂ ਵਾਲਿਆ ਤੇਰੀ ਬੇਰੀ ਦੀ ਅਰਦਾਸ ਹੋ ਚੁੱਕੀ ਹੈ, ਗੁਰੂ ਦੇ ਲੰਗਰ 'ਚ ਤੇਰਾ ਹਿੱਸਾ ਵੀ ਪੈ ਗਿਆ ਹੈ, ਤੇਰੇ ਚੰਗੇ ਭਾਗਾਂ ਦਾ ਫਲ ਹੈ, ਬਾਬੇ ਦੇ ਇਨ੍ਹਾਂ ਕਹਿ ਜਿਆਂ ਹੀ ਦੋ ਚੇਲਿਆਂ ਨੇ ਬੇਰੀ ਨੂੰ ਤਕੜੇ ਹੋ ਕੇ ਹੱਥ ਪਾ ਲਏ ਤਾਂ ਸੱਜਣ ਸਿੰਘ ਉੱਠਿਆ ਠਹਿਰੋ, ਬੇਰੀ ਚੁੱਕਣ ਵਾਲੇ ਪਿੱਛੇ ਹੱਟ ਗਏ। ਸੱਜਣ ਸਿੰਘ ਨੇ ਪੈਂਡਾ ਤੈਅ ਕੀਤੀ ਪੈਰਾਂ 'ਚੋਂ ਜੁੱਤੀ ਲਾਹ ਲਈ, ਗਲ 'ਚ ਪਰਨਾ ਪਾ ਲਿਆ ਤੇ ਬਾਬਿਆਂ ਦੀ ਜੀਪ ਵੱਲ ਮੂੰਹ ਕਰਕੇ ਇਕ ਲੱਤ ਤੇ ਖੜ੍ਹਾ ਹੋ ਅਰਦਾਸ ਸ਼ੁਰੂ ਕਰ ਦਿੱਤੀ।

ਬਾਬਿਆਂ ਦੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਹੀ ਉਸ ਨੇ ਕਦੀ ਵਾਰੀ ਹੱਥ ਜੀਪ ਨੂੰ ਤੇ ਕਦੀ ਵਾਰੀ ਹੱਥ ਧਰਤੀ ਨੂੰ ਵੀ ਲਾਏ। ਅਰਦਾਸ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਸੱਜਣ ਸਿੰਘ ਨੇ ਗਰਜਵੀਂ ਆਵਾਜ਼ 'ਚ ਕਿਹਾ ਲਓ ਹੁਣ ਬਾਬਾ ਜੀ ਥੋਡੀ ਅਰਦਾਸ ਵੀ

ਪਰਵਾਨ ਕਰ ਲਈ ਹੈ । ਗੱਲ ਨੂੰ ਚਾਲੀ -ਪੰਜਾਹ ਭਰੀਦੇ ਆ ਰਹੇ ਹਨ। ਏਨਾ ਲਾਉਣ ਲਈ ਵੀ ਲੰਗਰ ਚ ਤੁਹਾਡਾ ਹਿਸਾ ਪੈ ਰਿਹਾ ਹੈ । ਹੁਣ ਏਦਾਂ ਕਰੋ ਮੇਰੀ ਅਰਦਾਸ ਵਾਲੀਆ ਚਾਰ ਪੌੜੀਆਂ ਜੀਭ ਤੋਂ ਥੱਲੇ ਲਾਹ ਦਿਉ।

ਇਨ੍ਹਾਂ ਸੁਣ ਕੇ ਸਾਰੇ ਹੀ ਭਾਇਆਂ ਦੇ ਮੂੰਹ ਤੋਂ ਹਵਾਇਆਂ ਉਡ ਗਈਆਂ, ਬਾਕੀ ਇਕ-ਦੂਜੇ ਦੇ ਮੂੰਹ ਵੱਲ ਵੇਖਣ ਲੱਗੇ। ਸੱਜਣ ਸਿੰਘ ਪਾਸੇ ਖੜ੍ਹਾ ਅਰਦਾਸ ਵੇਖ ਰਿਹਾ ਸੀ ।।

ਸਿਮਰਨ ਕੌਰ
ਬੀਏ (ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ) ਸਾਲ ਪਹਿਲਾ

ਆਨਲਾਈਨ ਸਿੱਖਿਆ ਪ੍ਰਣਾਲੀ

ਆਨਲਾਈਨ ਸਿੱਖਿਆ, ਸਿੱਖਿਆ ਦਾ ਇਕ ਅਜਿਹਾ ਮਾਧਿਅਮ ਹੈ ਜਿਸ ਰਾਹੀਂ ਅਧਿਆਪਕ ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਘਰ ਬੈਠੇ ਬੈਠੇ ਇੰਟਰਨੈੱਟ ਦੇ ਰਾਹੀਂ ਸਿੱਖਿਆ ਦੇ ਆਦਾਨ ਪ੍ਰਦਾਨ ਲਈ ਇਕ - ਦੂਜੇ ਨਾਲ ਜੁੜ ਸਕਦੇ ਹਨ। ਲੌਕਡਾਊਨ ਦੇ ਨਾਲ ਹੀ ਜਿਵੇਂ ਇਕ ਨਵੇਂ ਦੌਰ ਦਾ ਆਰੰਭ ਹੋਇਆ। ਅਧਿਆਪਕਾਂ ਅਤੇ ਵਿਦਿਆਰਥੀਆਂ ਲਈ ਜਿਵੇਂ ਇਮਤਿਹਾਨ ਦੀ ਘੜੀ ਸ਼ੁਰੂ ਹੋ ਗਈ। ਕੋਵਿਡ - 19 ਨਾਂ ਦੀ ਬਿਮਾਰੀ ਨੇ ਸਭ ਕੁਝ ਠੱਪ ਕਰਵਾ ਦਿੱਤਾ। ਅਜਿਹੇ ਸਮੇਂ ਵਿਦਿਆਰਥੀਆਂ ਦੀ ਪੜ੍ਹਾਈ ਦਾ ਨੁਕਸਾਨ ਨਾ ਹੋਵੇ, ਇਸ ਸੰਦਰਭ ਵਿਚ ਆਨਲਾਈਨ ਸਿੱਖਿਆ ਪ੍ਰਣਾਲੀ ਦੀ ਭੂਮਿਕਾ ਬੇਹੱਦ ਅਹਿਮ ਰਹੀ ਹੈ। ਆਨਲਾਈਨ ਸਿੱਖਿਆ ਪ੍ਰਣਾਲੀ ਦੇ ਵਿਸ਼ਾਲ ਵਰਦਾਨ ਦੇ ਨਾਲ - ਨਾਲ ਕਈ ਫ਼ਾਇਦੇ ਅਤੇ ਨੁਕਸਾਨ ਵੀ ਹਨ, ਜੋ ਇਥੇ ਸਾਡੀ ਚਰਚਾ ਦਾ ਵਿਸ਼ਾ ਹਨ।

ਜੇ ਅਸੀਂ ਆਨਲਾਈਨ ਸਿੱਖਿਆ ਦੇ ਸਕਾਰਾਤਮਕ ਪਹਿਲੂਆਂ ਬਾਰੇ ਗੱਲ ਕਰੀਏ, ਆਨਲਾਈਨ ਸਿੱਖਿਆ ਪ੍ਰਬੰਧ ਵਿਚ ਅਧਿਆਪਕ ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਦੂਰ ਤੋਂ ਦੂਰ ਅਤੇ ਲਗਾਤਾਰ ਕਿਸੇ ਵੀ ਸਮੇਂ ਸੰਪਰਕ ਵਿਚ ਰਹਿ ਸਕਦੇ ਹਨ। ਆਨਲਾਈਨ ਸਹਾਇਕ ਸਿੱਖਿਅਕ ਸਾਧਨਾਂ ਜਿਵੇਂ ਗੂਗਲ ਮੀਟ, ਵੈਬਸਾਈਟ ਚਿੱਤਰਾਂ, ਵੀਡੀਓ ਆਦਿ ਰਾਹੀਂ ਅਧਿਆਪਕ, ਆਨਲਾਈਨ ਅਧਿਆਪਨ ਨੂੰ ਹੋਰ ਵੀ ਰੌਚਕ ਅਤੇ ਸਰਲ ਬਣਾ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਆਫਲਾਈਨ ਜਾਂ ਸਕੂਲਾਂ ਵਿਚ ਜਿਥੇ ਅਧਿਆਪਨ ਇਕ ਯੋਜਨਾਬੱਧ ਤਰੀਕੇ ਨਾਲ ਕੀਤਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ, ਉਥੇ ਹੀ ਆਨਲਾਈਨ ਅਧਿਆਪਨ ਵਿਚ ਇਕ ਲਚੀਲਾਪਣ ਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਜਿਸ ਵਿਚ ਕਲਾਸ ਦੇ ਸਮੇਂ ਵਿਚ ਸਹੂਲਤ ਮੁਤਾਬਿਕ ਬਦਲਾਅ ਕੀਤਾ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਸਮੇਂ ਦੇ ਨਾਲ-ਨਾਲ ਕਿਸੇ ਵੀ ਸਥਾਨ ਤੋਂ ਕਲਾਸ ਲਈ ਜਾ ਸਕਦੀ ਹੈ। ਬਸ ਮੋਬਾਇਲ, ਕੰਪਿਊਟਰ ਅਤੇ ਇੰਟਰਨੈੱਟ ਸਾਧਨਾਂ ਦਾ ਹੋਣਾ ਜ਼ਰੂਰੀ ਹੈ।

ਆਨਲਾਈਨ ਸਿੱਖਿਆ ਦੇ ਕਈ ਸਕਾਰਾਤਮਕ ਪਹਿਲੂ ਹੋਣ ਦੇ ਨਾਲ ਨਾਲ ਕਈ ਨਕਾਰਾਤਮਕ ਪੱਖ ਵੀ ਹਨ। ਆਫਲਾਈਨ ਕਲਾਸ ਵਿਚ ਅਧਿਆਪਕ ਵਿਦਿਆਰਥੀਆਂ ਦੇ ਨੈਤਿਕ ਅਤੇ ਵਿਹਾਰਿਕ ਸਿੱਖਿਆ ਪ੍ਰਦਾਨ ਕਰਨ ਦੇ ਨਾਲ-ਨਾਲ ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਤੇ ਉਸ ਦੇ ਮੁਲਾਂਕਣ ਦਾ ਵੀ ਅਧਿਐਨ ਕਰ ਸਕਦਾ ਹੈ ਪਰ ਆਨਲਾਈਨ ਅਧਿਆਪਨ ਵਿਚ ਇਹ ਸੰਭਵ ਨਹੀਂ। ਜਿਵੇਂ ਆਫਲਾਈਨ ਸਿੱਖਿਆ ਪ੍ਰਣਾਲੀ ਵਿਚ ਅਧਿਆਪਕ ਵਿਦਿਆਰਥੀਆਂ ਨਾਲ ਸਿੱਧੇ ਜੁੜਦੇ ਹਨ ਅਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਸਮਝ ਸਕਦੇ ਹਨ, ਵਿਦਿਆਰਥੀਆਂ ਦੀ ਕਿਰਿਆ ਪ੍ਰਤੀਕਿਰਿਆ, ਬੋਲ ਚਾਲ, ਹਾਵ ਭਾਵ, ਸਰੀਰਕ ਭਾਸ਼ਾ ਨੂੰ ਪ੍ਰਤੱਖ ਰੂਪ ਵਿਚ ਦੇਖ ਅਤੇ ਪੜ੍ਹ ਸਕਦੇ ਹਨ ਉਥੇ ਆਨਲਾਈਨ ਸਿੱਖਿਆ ਵਿਚ ਇਹ ਸੰਭਾਵਨਾ ਬਹੁਤ ਘੱਟ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਕਈ ਵਾਰ ਚੰਗੇ ਅਤੇ ਤੇਜ਼ ਗਤੀ ਦੇ ਇੰਟਰਨੈੱਟ ਸਪੀਡ ਦੇ ਅਭਾਵ ਵਿਚ ਕਲਾਸ ਨਹੀਂ ਹੋ ਪਾਉਂਦੀ ਜਾਂ ਵਿਘਨ ਪੈ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਆਨਲਾਈਨ ਅਧਿਆਪਨ ਵਿਚ ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਜ਼ਿਆਦਾ ਗੰਭੀਰ ਅਤੇ ਅਨੁਸ਼ਾਸਿਤ ਨਹੀਂ ਰਹਿ ਪਾਉਂਦੇ। ਅਧਿਆਪਕ ਵਲੋਂ ਦਿੱਤੇ ਗਏ ਅਸਾਈਨਮੈਂਟ ਅਤੇ ਪ੍ਰਾਜੈਕਟਾਂ ਨੂੰ ਸਮੇਂ ਤੇ ਪੂਰਾ ਨਹੀਂ ਕਰ ਪਾਉਂਦੇ ਅਤੇ ਨਾ ਹੀ ਪ੍ਰਤੀਯੋਗਤਾ ਦਾ ਵੀ ਮਾਹੌਲ ਉਤਪੰਨ ਹੋ ਪਾਉਂਦਾ ਹੈ। ਵਿਵਹਾਰਕ ਸਿੱਖਿਆ ਦੇ ਅਭਾਵ ਕਾਰਨ ਵਿਦਿਆਰਥੀਆਂ ਵਿਚ ਉਤਸ਼ਾਹ ਦੀ ਆਮ ਤੌਰ ਤੇ ਕਮੀ ਵੇਖੀ ਜਾ ਸਕਦੀ ਹੈ।

ਆਨਲਾਈਨ ਸਿੱਖਿਆ ਦੇ ਕਈ ਨੁਕਸਾਨ ਅਤੇ ਫ਼ਾਇਦੇ ਹੋਣ ਦੇ ਬਾਵਜੂਦ ਵੀ ਕੋਰੋਨਾ ਕਾਲ ਵਿਚ ਆਨਲਾਈਨ ਸਿੱਖਿਆ ਪ੍ਰਬੰਧ ਨੇ ਵਿਦਿਆਰਥੀਆਂ ਅਤੇ ਸਿੱਖਿਅਕ ਅਦਾਰਿਆਂ ਦੀ ਬਹੁਤ ਸਹਾਇਤਾ

ਕੀਤੀ ਹੈ। ਜਿਸ ਕਾਰਨ ਇਸ ਔਖੇ ਸਮੇਂ ਵਿੱਚ ਵੀ ਸਿੱਖਿਆ ਦਾ ਆਦਾਨ-ਪ੍ਰਦਾਨ ਨਿਰੰਤਰ ਚੱਲਦਾ ਰਿਹਾ ਅਤੇ ਉਸੇ ਗਤੀਸ਼ੀਲਤਾ ਨਾਲ ਚੱਲ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਬੇਸ਼ਕ ਆਨਲਾਈਨ ਸਿੱਖਿਆ ਪ੍ਰਣਾਲੀ ਦੇ ਪ੍ਰਭਾਵ ਅਧੀਨ ਬਹੁਤ ਕੁਝ ਛੁੱਟ ਗਿਆ ਪ੍ਰਤੀਤ ਹੁੰਦਾ ਹੈ :- ਜਿਵੇਂ ਚੌਕ, ਡਸਟਰ, ਬਲੈਕਬੋਰਡ, ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਦੀਆਂ ਸ਼ਰਾਰਤਾਂ, ਛੁੱਟੀ - ਮਿੱਠੀ ਨੋਕ ਝੋਕ, ਚੰਗੇ ਸੰਵਾਦ, ਗਰੁੱਪ ਡਿਸਕਸ਼ਨ ਆਦਿ ਪਰ ਫਿਰ ਵੀ ਆਨਲਾਈਨ ਸਿੱਖਿਆ ਪ੍ਰਣਾਲੀ ਅਧੀਨ ਅਧਿਆਪਕ ਲਗਾਤਾਰ ਬੱਚਿਆਂ ਦੇ ਬਹੁ-ਮੁਖੀ ਵਿਕਾਸ ਨੂੰ ਨਿਰੰਤਰ ਗਤੀਸ਼ੀਲ ਰੱਖਣ ਲਈ ਯਤਨਸ਼ੀਲ ਹਨ।

ਡਾ ਮੀਨਾਕਸ਼ੀ
ਗੈਸਟ ਫੈਕਲਟੀ, ਪੰਜਾਬੀ

ਭੰਡਿ ਜੰਮੀਐ ਭੰਡਿ ਨਿੰਮੀਐ

ਔਰਤ ਜੰਮਦੀ ਨਹੀਂ ਬਣਾਈ ਜਾਂਦੀ ਹੈ, ਔਰਤ: ਕੀ ਪਰਿਭਾਸ਼ਾ ਹੋ ਸਕਦੀ ਹੈ ਇਸ ਸ਼ਬਦ ਦੀ? ਇਕ ਮਨੁੱਖੀ ਜੀਵ: ਜਿਸਨੂੰ ਔਰਤ ਸ਼ਬਦ ਨਾਲ ਚਿੱਤ੍ਰਿਤ ਕੀਤਾ ਗਿਆ ਹੈ, ਔਰਤ: ਔਰਤ ਇਕ ਜਾਤਕ ਹੈ, ਅੰਡਾ ਬਣਾਉਣ ਵਾਲੀ ਹੈ ਅਤੇ ਇਕ ਔਰਤ ਹੈ ਇਹ ਸ਼ਬਦ ਬਹੁਤ ਹਨ, ਉਸਨੂੰ ਪਰਿਭਾਸ਼ਿਤ ਕਰਨ ਲਈ, ਸਿਮੋਨ ਦੀ ਬੁਵਆਰ ਦਾ ਇਹ ਕਥਨ ਸਾਡਾ ਧਿਆਨ ਬਾਰ ਬਾਰ ਆਪਣੇ ਵੱਲ ਖਿੱਚਦਾ ਹੈ।

ਸਮਾਜ ਦਾ ਅੱਧਾ ਹਿੱਸਾ ਬਾਕੀ ਅੱਧਿਆਂ ਵਾਂਗ ਕਿਉਂ ਨਹੀਂ ਜੀਅ ਸਕਦਾ? ਆਪਣੀ ਮਰਜ਼ੀ ਨਾਲ, ਆਪਣੇ ਢੰਗ, ਬਿਨਾਂ ਡਰ, ਬਿਨਾ ਭੇੜ ਦੇ। ਆਖਿਰ ਕਿਉਂ ਅੱਧਾ ਹਿੱਸਾ (ਮਰਦ) ਸ੍ਰੇਸ਼ਠ ਅਤੇ ਅੱਧਾ ਹੀਣ ਹੈ! ਮਾਤਰ ਪ੍ਰਧਾਨ ਤੋਂ ਪਿਤਾ ਪ੍ਰਧਾਨ ਸਮਾਜ ਵਿੱਚ ਹੋਏ ਖ਼ਤਰਨਾਕ ਬਦਲਾਅ ਨੇ ਔਰਤ ਨੂੰ ਦੁਜੈਲੇ ਸਥਾਨ ਤੇ ਕੇਵਲ ਧੱਕਿਆ ਹੀ ਨਹੀਂ ਸਗੋਂ ਹੌਲੀ-ਹੌਲੀ ਹੀਣ ਤੋਂ ਹੀਣ, ਮਾਨਵੀ ਜੀਵ ਤੋਂ ਉਪਭੋਗ ਦੀ ਵਸਤੂ ਬਣਾਉਣ ਲਈ ਧੱਕਦਾ ਹੀ ਚਲਾ ਗਿਆ। ਵੇਦਾਂ, ਉਪਨਿਸ਼ਦਾਂ, ਧਰਮ ਸੂਤਰਾਂ, ਇਤਿਹਾਸ (ਤੁਲਸੀ ਦਾਸ - ਢੋਰ ਗਵਾਰ ਸ਼ੂਦਰ ਪਸ਼ੂ ਨਾਰੀ, ਏ ਸਭ ਤਾੜਨ ਕੇ ਅਧਿਕਾਰੀ), ਨਾਥਾਂ ਜੋਗੀਆਂ, ਭਗਤਾਂ ਕਿੱਸਾਕਾਰਾਂ ਨੇ ਕਮਅਕਲ, ਪਾਪਣ, ਡਾਇਣ, ਬੁਰੀ ਮੱਤ ਵਾਲੀ, ਪੈਰ ਦੀ ਜੁੱਤੀ ਵਰਗੇ ਨਾਵਾਂ ਨਾਲ ਪੁਕਾਰਿਆ। ਪਰ ਏਹੋ ਜਿਹੇ ਇਸਤਰੀ ਵਿਰੋਧੀ ਮਾਹੌਲ ਅੰਦਰ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦਾ ਸਭ ਨੂੰ ਵੰਗਾਰਨਾ ਕਿਸੇ ਕ੍ਰਾਂਤੀ ਤੋਂ ਘੱਟ ਨਹੀਂ ਸੀ ਜਦੋਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਕਿਹਾ -

"ਭੰਡਿ ਜੰਮੀਐ ਭੰਡਿ ਨਿੰਮੀਐ ਭੰਡਿ ਮੰਗਣੁ ਵੀਆਹੁ॥
ਭੰਡਹੁ ਹੋਵੈ ਦੋਸਤੀ ਭੰਡਹੁ ਚਲੈ ਰਾਹੁ॥
ਭੰਡੁ ਮੁਆ ਭੰਡੁ ਭਾਲੀਐ ਭੰਡਿ ਹੋਵੈ ਬੰਧਾਨੁ॥
ਸੋ ਕਿਉ ਮੰਦਾ ਆਖੀਐ ਜਿਤੁ ਜੰਮਹਿ ਰਾਜਾਨ॥"

ਕੀ ਕਦੇ ਕਿਸੇ ਨੇ ਸੋਚਿਆ ਸੀ ਕਿ ਇਸ ਔਰਤ ਦਾ ਵੀ ਕੋਈ ਖ਼ਾਸ ਦਿਨ ਦੁਨੀਆਂ ਭਰ ਵਿੱਚ ਮਨਾਇਆ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ? ਸ਼ਾਇਦ ਨਹੀਂ। ਪਰ ਜਦੋਂ ਕਲੇਰਾ ਜੈਟਕਿਨ, ਰੋਜ਼ਾ ਲਕਜ਼ਮਬਰਗ, ਕੇਟ ਡੰਕਰ, ਪਾਉਲਾ ਥੀਡ ਵਰਗੀਆਂ ਔਰਤਾਂ ਨੇ ਵੋਟ ਦਾ ਅਧਿਕਾਰ ਤੇ ਬਰਾਬਰੀ ਦੇ ਹੱਕਾਂ ਲਈ ਆਵਾਜ਼ ਬੁਲੰਦ ਕੀਤੀ ਤਾਂ ਵੱਡੀ ਪੱਧਰ ਤੇ ਭਰਵਾਂ ਹੁੰਗਾਰਾ ਮਿਲਿਆ। ਪਰ ਔਰਤਾਂ ਦੀ ਸੰਘਰਸ਼ਾਂ ਵਿੱਚ ਆਮਦ ਤੋਂ ਸੱਤਾਵਾਦੀ ਧਿਰਾਂ ਅਤੇ ਮਰਦਾਂ ਦੀ ਸੋਚ ਅੰਦਰ ਵੀ ਹਲਚਲ ਹੋਣ ਲੱਗੀ। ਦਾਵੇ ਦੇ ਬਾਵਜੂਦ ਆਪਣੀ ਆਵਾਜ਼ ਬੁਲੰਦ ਕਰਨਾ ਪਿਤ੍ਰੀ ਸਮਾਜ ਲਈ ਹਮੇਸ਼ਾ ਹੀ ਹਲੂਣਾ ਦੇ ਰੱਖਣ ਵਾਲੀਆਂ ਘਟਨਾਵਾਂ ਵਿੱਚ ਸ਼ੁਮਾਰ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਆਖਿਰ 1996 ਵਿੱਚ ਸੰਯੁਕਤ ਰਾਸ਼ਟਰ ਸੰਘ ਵਲੋਂ 8 ਮਾਰਚ ਨੂੰ ਅੰਤਰ-ਰਾਸ਼ਟਰੀ ਮਹਿਲਾ ਦਿਵਸ ਵਜੋਂ ਮਾਨਤਾ ਮਿਲੀ ਜਿਸਦਾ ਥੀਮ ਸੀ 'ਅਤੀਤ ਦਾ ਜਸ਼ਨ ਅਤੇ ਭਵਿੱਖ ਲਈ ਯੋਜਨਾ'. ਪਰ ਇੱਕੀਵੀਂ ਸਦੀ ਦੇ 20ਵੇਂ ਅਤੇ 21ਵੇਂ ਵਰੇ ਵਿੱਚ ਜਿਵੇਂ ਥੀਮ ਸੀ 'I AM GENERATION EQUALITY : REALIZING WOMEN'S RIGHTS' ਅਤੇ 'WOMEN IN LEADERSHIP : ACHIEVING AN EQUAL FUTURE IN A COVID-19 WORLD' ਉਵੇਂ ਹੀ ਇਸ ਸਮੇਂ ਭਾਰਤ ਅੰਦਰ ਚਲ ਰਹੇ ਸੰਘਰਸ਼ ਦੌਰਾਨ ਜਿੱਥੇ ਔਰਤਾਂ ਦੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਵਿੱਚ ਇਕ ਬਹੁਤ ਵੱਡਾ ਬਦਲਾਅ ਵੇਖਣ ਨੂੰ ਮਿਲ ਰਿਹਾ ਹੈ ਉੱਥੇ ਹੀ ਸਿਆਸੀ ਗਲਿਆਰਿਆਂ ਵਿੱਚ ਵੀ ਘੁਟਨ ਵਧਦੀ ਜਾ ਰਹੀ ਹੈ। ਨਵਕਿਰਨ ਰੰਜਨ ਸਿੰਘ ਦੀਆਂ ਇਹ ਸਤਰਾਂ ਅਜੋਕੀ ਸਥਿਤੀ ਦੀ ਬਾਖੂਬੀ ਝਲਕ ਪੇਸ਼ ਕਰਦੀਆਂ ਹਨ।

ਲੜਕੀਆਂ ਘਰ ਸੇ ਬਾਹਰ ਨਿਕਲ ਰਹੀ ਹੈਂ
ਯੇਹ ਹਮਾਰੇ ਸਮੇ ਕੀ ਸਬ ਸੇ ਮਹੱਤਵਪੂਰਣ ਖ਼ਬਰ
ਹੈ, ਲੜਕੀਆਂ ਬੋਲਨੇ ਲਗੀ ਹੈਂ
ਯੇਹ ਹਮਾਰੇ ਸਮੇ ਕੀ ਸਬਸੇ ਸੁਹਾਨੀ ਖ਼ਬਰ ਹੈ,

ਲੜਕੀਆਂ ਘਰਨੇ ਮਰ ਰਹੀ ਹੈਂ
ਏਹ ਹਮਾਰੇ ਸਮੇਂ ਕੀ
ਸਬਸੇ ਚੌਂਕਾਨੇ ਵਾਲੀ ਖ਼ਬਰ ਹੈ।
ਲੜਕੀਆਂ ਅਪਣੇ ਹਕ ਕੇ ਲੀਏ ਲੜਨੇ ਲਗੀ ਹੈਂ
ਏਹ ਹਮਾਰੇ ਸਮੇਂ ਕੀ ਸਬਸੇ ਭਿਆਨਕ ਖ਼ਬਰ ਹੈ।

ਆਖ਼ਿਰ ਕਿਉਂ ਏਨਾ ਡਰ ਲਗਦਾ ਹੈ ਔਰਤਾਂ ਦੀ ਸ਼ਮੂਲੀਅਤ ਤੋਂ ਹਾਕਮ ਧਿਰਾਂ ਨੂੰ? 2019 ਵਿਚ ਭਾਰਤੀ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ ਦੀਆਂ ਦੋ ਵਿਦਿਆਰਥਣਾਂ ਰਾਸ਼ਿਦਾ ਸ਼ੱਬੀਰ ਹੁਸੈਨ ਅਤੇ ਰੂਮੀਸਾ ਲਖਾਨੀ ਵਲੋਂ ਔਰਤ ਦੇ ਹੋਣ ਸੰਬੰਧੀ ਬਣਾਏ ਇਕ ਪੋਸਟਰ ਨੇ ਰੂੜ੍ਹੀਵਾਦੀ ਸੋਚ ਨੂੰ ਵੰਗਾਰਨ ਵਿਚ ਅਹਿਮ ਭੂਮਿਕਾ ਨਿਭਾਈ ਸੀ। ਅੱਜ ਜਦੋਂ ਪੂਰਾ ਵਿਸ਼ਵ NEW WORLD ORDER ਦੇ ਸ਼ਿਕੰਜੇ ਵਿਚ ਫਸਦਾ ਜਾ ਰਿਹਾ ਹੈ ਤਾਂ ਉਸ ਵੇਲੇ ਬੇਬੇ ਨਾਨਕੀ, ਮਾਤਾ ਖੀਵੀ, ਮਾਤਾ ਗੰਗਾ, ਮਾਤਾ ਨਾਨਕੀ, ਮਾਤਾ ਗੁਜਰ ਕੌਰ, ਮਾਤਾ ਸੁੰਦਰੀ, ਮਾਈ ਭਾਗੋ ਦੀਆਂ ਵਾਰਿਸਾਂ ਨਾਨਕ, ਤੇਗ ਬਹਾਦਰ ਤੇ ਗੋਬਿੰਦ ਦੇ ਵਾਰਿਸਾਂ ਦੇ ਨਾਲ ਘਰ ਦੀ ਚਾਰ ਦੀਵਾਰੀ ਤੋਂ ਬਾਹਰ ਨਿਕਲ ਜਿੱਤ ਦਾ ਹੋਕਾ ਦਿੰਦੀਆਂ ਸਵੈ ਨਿਰਭਰ ਹੋਣ ਵਲ ਕਦਮ ਵਧਾ ਚੁਕੀਆਂ ਹਨ। ਉਚੀ ਸੋਚ, ਹੌਂਸਲੇ, ਲਿਆਕਤ ਨਾਲ ਭਰੀਆਂ ਦਾਦੀਆਂ, ਮਾਵਾਂ, ਧੀਆਂ ਆਪਣੇ ਪਿਉ, ਪਤੀ, ਪੁੱਤਾਂ ਨਾਲ ਦਿੱਲੀ ਜਾ ਕੇ ਦਿੱਲੀ ਦੀਆਂ ਬਰੂਹਾਂ ਤੇ ਆਪਣੇ ਸਵੈਮਾਣ, ਆਪਣੀਆਂ ਅਗਲੀਆਂ ਨਸਲਾਂ ਦੇ ਸੁਰੱਖਿਅਤ ਭਵਿੱਖ ਅਤੇ ਚੰਗੀ ਸਮਾਜ ਲਈ ਸੰਘਰਸ਼ ਲੜ ਰਹੀਆਂ ਸਨ ਤੇ ਜਿੱਤਾਂ ਦਾ ਸਾਰ ਦੇ ਰਹੀਆਂ ਸਨ। ਦੇਸ਼-ਵਿਦੇਸ਼ ਤੋਂ ਗ੍ਰੇਟਾ ਥਨਬਰਗ, ਅਮੈਂਡਾ ਸਰਨੀ, ਮੀਨਾ ਹੈਰਿਸ ਵਰਗੀਆਂ ਧੀਆਂ ਜਿਹਨਾਂ ਦੇ ਬੋਲਾਂ ਤੋਂ ਸਾਰੀ ਮਰਦਾਵੀਂ ਸੋਚ ਨਾਲ ਲਬਰੇਜ਼ ਹਾਕਮ ਧਿਰਾਂ ਦੀ ਰਾਤਾਂ ਦੀ ਨੀਂਦ ਹਰਾਮ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। 8 ਮਾਰਚ 2021 ਰਾਜਧਾਨੀ ਦੀਆਂ ਬਰੂਹਾਂ ਤੇ ਦੇਸ਼ ਦੀਆਂ ਔਰਤਾਂ ਦੇ ਇਕੱਠ ਇਤਿਹਾਸਿਕ ਹੋ ਨਿਬੜਿਆ। ਚਾਰੇ ਪਾਸੀਂ ਔਰਤ ਮੁਕਤੀ ਦਿਵਸ ਦੇ ਉੱਚੇ ਨਾਹਰੇ ਹਰੇ ਸਨ। ਲਖਵੀਰ ਕੌਰ ਦਾ ਕਹਿਣਾ ਸੀ ਔਰਤ ਦਿਵਸ ਅਸਲ ਵਿਚ ਉਸ ਦਿਨ ਮਨਾਇਆ ਜਾਵੇਗਾ ਜਦੋਂ ਐਸਿਡ ਅਟੈਕ ਬੰਦ ਹੋਣਗੇ, ਜਦੋਂ ਰੇਪ ਬੰਦ ਹੋਣਗੇ, ਔਰਤਾਂ ਨੂੰ ਉਹਨਾਂ ਦੀ ਕਿਸਮਤ ਉੱਪਰ ਨਹੀਂ ਛੱਡਿਆ ਜਾਵੇਗਾ ਸਗੋਂ ਬਰਾਬਰ ਦੇ ਹੱਕ ਦਿੱਤੇ ਜਾਣਗੇ ਅਤੇ ਜਾਗਰੂਕਤਾ ਆਪਣੇ ਘਰਾਂ ਤੋਂ ਸ਼ੁਰੂ ਕਰਨੀ ਪਵੇਗੀ।

ਨੈਪੋਲੀਅਨ ਨੇ ਕਿਹਾ ਸੀ, 'GIVE ME GOOD MOTHERS AND I SHALL GIVE YOU BETTER NATION.'

ਹੁਣ ਔਰਤ ਨੂੰ 'ਅਬਲਾ' ਬਣਾਇਆ ਕਿਵੇਂ ਜਾਂਦਾ ਹੈ? ਇਸ ਦਾ ਉੱਤਰ ਤਾਂ ਇਹੀ ਹੈ ਕਿ ਮਰਦ ਪ੍ਰਧਾਨ ਸਮਾਜ ਅੰਦਰ ਪੰਛੀਆਂ ਦੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਹੀ ਔਰਤ ਨੂੰ ਚਾਰਦੀਵਾਰੀ ਅੰਦਰ, ਚਾਰਦੀਵਾਰੀ ਅੰਦਰ ਨਹੀਂ ਤਾਂ ਫਿਰ ਪਰਦੇ ਵਿਚ ਰੱਖ ਲਿਆ ਜਾਵੇ ਅਤੇ ਔਰਤ ਨੂੰ ਬਰਾਬਰਤਾ ਦਾ ਦਰਜਾ ਨਾ ਦੇ ਕੇ 'ਗੈਰ-ਮਹੱਤਤਾ' ਵਾਲੇ ਬੰਧਨ ਵਿਚ ਬੰਨ੍ਹ ਦਿੱਤਾ ਜਾਵੇ। ਤਾਂ ਇਸ ਵਿਚ ਕੋਈ ਸ਼ੱਕ ਨਹੀਂ ਕਿ ਔਰਤ ਫਿਰ ਤੋਂ 'ਅਬਲਾ' ਬਣ ਜਾਵੇ ਤੇ ਇਵੇਂ 'ਅਬਲਾ' ਬਣ ਕੇ ਹੀ ਆਪਣੀ ਸਾਰੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਕੱਟਦੀ ਰਹੀ। ਪਰ ਹੁਣ ਔਰਤ 'ਅਬਲਾ' ਨਹੀਂ। ਇਹ ਔਰਤਾਂ ਸਮੇਂ ਦੀ ਮੰਗ ਨੂੰ ਮੁੱਖ ਰੱਖਦਿਆਂ ਹੋਇਆਂ ਦੇਸ਼ ਦੇ ਨਵ-ਨਿਰਮਾਣ ਵਿਚ ਆਪਣਾ ਅਹਿਮ ਯੋਗਦਾਨ ਪਾ ਰਹੀਆਂ ਹਨ। ਹੁਣ ਉਸ ਨੂੰ ਪਤਾ ਹੈ ਕਿ ਇਸ ਮਰਦ ਪ੍ਰਧਾਨ ਸਮਾਜ ਕੋਲੋਂ ਆਪਣੇ ਹੱਕ ਹਕੂਕ ਕਿਵੇਂ ਲੈਣੇ ਹਨ। ਦੁਨੀਆਂ ਵਿਚ ਔਰਤਾਂ ਦੀ ਦੂਸਰੀ ਪਾਰੀ ਨੂੰ ਵੇਖਦੇ ਹੋਏ ਤੰਦਰੁਸਤ ਸਮਾਜ ਦੀ ਆਸ ਬੱਝ ਰਹੀ ਹੈ। ਆਓ ਸੋਚ ਬਦਲੀਏ ਤੇ ਇਕ ਵਾਰ ਫਿਰ ਤੋਂ ਔਰਤ/ਸ਼ਕਤੀ ਦੁਆਰਾ ਸਮਾਜ ਦੇ ਨਵ-ਨਿਰਮਾਣ ਵਿਚ ਕਦਮਾਂ ਨਾਲ ਕਦਮ ਮਿਲਾ ਕੇ ਚੱਲਣ ਦਾ ਪ੍ਰਣ ਕਰੀਏ।

ਡਾ. ਸਿਮਰਨ ਸੇਠੀ
ਗੈਸਟ ਫੈਕਲਟੀ, ਪੰਜਾਬੀ

Academic
And
Extral Curicular
Activities

(2021-2022)

Number of Students

At present, the centre has 278 students for BA Prog. and 139 students for B.Com. in the first year, 229 students for BA Prog. and 181 students for B.Com. in the second year and 296 students for BA Prog. and 130 students for B.Com. for the final year. Here is a detailed glimpse of the various academic and cultural activities held at the centre in the Academic Year of 2021-2022.

Orientation Program

The session unfurled with an orientation program for the students on January 2, 2022 at 11:00 AM on Sunday at Mata Sundri College, NCWEB centre affiliated to the University of Delhi. The program started with prayer by Gursimran Kaur, final year student of B.Com. After that, the teacher in-charge Dr. Indu Kumari addressed the students. She welcomed the freshers and provided information about various academic and co-cultural activities going on throughout the year. Not only did she clarify different problems of the students in the context of academic activities but also gave detailed information on various topics related to time-table, attendance, assignment & examination.

During the session, the students got to know that, along with academic activities, various cultural and sports activities are also organized in the centre and the centre also publishes an annual e-magazine named 'Aparajita' where, both students and faculties alike, get an equal opportunity to publish their self-composed insights.

Webinar on Importance of Ecosystem in Environment

Non-Collegiate Women Education Board in collaboration with Mata Sundri College for Women celebrated the World Environment Day on 5th June by organising a webinar on the topic '**Importance of Ecosystem in Environment**'. The primary speaker of the webinar was **Dr. Uzma Nadeem** of EVS Department, Mata Sundri College for Women. Webinar was graced by the humble presence of **Prof. Harpreet Kaur (Principal, Mata Sundri College for**

Women) and **Dr. Indu Kumari** (Teacher-In-Charge of the centre). Webinar was also overwhelmed by motivating presence of teachers and students of the centre.

Dr. Uzma Nadeem enriched the knowledge of the audience by further elaborating the topic '**Importance of Ecosystem in Environment'.** She started with explaining the meaning of ecosystem and also the causes and results of its degradation. She elaborated in depth on UN's target of restoring our ecosystem under the campaign '**Generation Restoration'**. She highlighted how an individual can also contribute towards 'ecosystem restoration' through 3 R's which are- '**Reimagine, Recreate and Restore**'.

International Yoga Day Celebration

Mata Sundri College for Women with Non-Collegiate Women's Education Board celebrated **International Yoga Day** on 21st June 2021 by organising a fabulous event on Google meet. The meet received an overwhelming participation from teachers and students of the centre. The event was graced by the presence of honourable director of NCWEB, **Prof. Geeta Bhatt**, **Dr. Uma Shankar**, **Prof Harpreet Kaur** and **Dr Indu Kumari**. Yoga day celebration was also ornated by the presence of Yoga expert **Ms Deepanjli** (National Player, Gold Medallist in All India Inter University Yoga Championship).

Deepanjli stressed on the need of constant 'Abhyasa' and discipline for harnessing the benefits of Yoga. She explained how Maharishi Patanjali gave the doctrines of Yoga in his Yoga Sutra and made Yoga a timeless jewel. Yoga is about extracting mental peace through investment in physical health.

World Wetland's Day Celebration

The World Wetlands Day (2nd February) was celebrated under the banner of the Eco-Club, Mata Sundri NCWEB Centre. Students got an opportunity to learn the importance of the Wetlands, in particular, and the concerns related to environmental conservation, in general. Students from all streams were also invited to participate in the poetry writing and poster making competition. The meeting began with the madam TIC, Dr. Indu Kumari's addressing all the attendees and motivating the spirits of the participants. The opening address was followed by Dr. Sumant Kumar's detailed presentation on the different aspects of wetlands and the general awareness about our ecosystem and its conservation. Through a slide presentation, Dr. Sumant focused on the types of wetlands, the classic case studies of certain wetland conservations, and also presented a list of the major wetlands in India. The presentation has been the enlightening part of the meet, and how such introduction can lead to further curiosities on the student's part. The presentation was followed by an online poetry competition and a poster-Making competition was organised for the students from all the courses and years. Students were asked to submit their creative posters on the theme of the day. For the poetry competition, a total of six students participated.

Surya Namaskar Yagya Program

'Surya Namaskar Yagya' was organized by the Mata Sundari College for Women Centre of Non-Collegiate for Women Education Board (NCWEB) on 30th January 2022, Sunday. On the occasion of 'Azadi Ka Amrit Mahotsav', This event was held under the guidance of Dr. Sushma Aggarwal of Laxmibai College and the Principal of the college, Prof. Harpreet Kaur. The

program started with the welcome address of Dr. Indu Kumari, TIC of NCWEB centre. Throwing a brief light on the importance of yoga for a healthy life and advised everyone to do yoga regularly. After that Dr. Sushma Aggarwal underlined the important role of yogasanas for all kinds of physical, mental and spiritual progress; not only spoke with the help of many references, but practically everyone involved in the program while presenting the yogasanas in the right form. Students and professors were also urged to keep doing it simultaneously in online form.

In the main part of the program Surya Namaskar was done in the frequency of thirteen. Dr. Sushma Aggarwal first introduced the students and professors present with the nuances of each asana of Surya Namaskar and then also discussed the precautions to be taken while doing yoga. The event was invigorating with the active participation of all the participants involved in the program.

Antarrashtriya Matribhasha Diwas

NCWEB centre of Mata Sundri College, University of Delhi conducted a digital celebration of Antarrashtriya Matribhasha Diwas through Google Meet on 27th February 2022. The event witnessed an overwhelming participation of students and faculties. The occasion was graced with the presence of the head of the institution Prof. (Dr.) Harpreet Kaur, Teacher-in-charge Dr. Indu Kumari and Prof. (Dr.) Nand Kishore, the chief guest of this auspicious and enlightening event.

The chief guest familiarized the participants with the importance of our Matribhasha and how one must use it with dignity. He lectured the students describing the history and etymology of Hindi language and its expansive usage in our everyday lives.

Extra-Curricular Activities

Extra-curricular activities have been part and parcel of the education system. This has helped students realize their hidden talents and the Organization to identify and mold them at a very young age. Mata Sundri College for Women, NCWEB recently conducted competitions on various events to bring out the hidden talents in the students.

Mehndi Competition

Mehndi Competition saw the maximum participation. Every hand turned into a Mehndi art reminding one of the traditions dating back centuries.

Rangoli Competition

Rangoli was another colorful event of the day. Various criteria like creativity, neatness, thematic representation etc. were adopted by the judges to narrow down the winners.

Poster Competition

Poster is a large sheet of paper that can be used for decoration, conveying message, etc. Creative posters grab the attention of the audience and

also conveys messages in a unique way. Participation in this event was huge and every student showcased creativity in a wonderful way.

Best Out of Waste

Accumulation of waste is a universal problem and India with a large and rising population has to play a major role in this field in the coming years. As a part of awareness generation and creative use of waste materials, the college conducted this competition. We were surprised to see some of the results produced by the students. We believe that each of these students turn out to be torch bearers of prudent use of resources and follow the goal of '**REDUCE, REUSE & RECYLCE**'

Poetry Competition

Poetry evokes a sense of emotion and experience which other forms of art may find difficult to replicate. The poetry competition also observed some fine presentations and participation.

Debate Competition

Debating skill is considered essential for critical and quick thinking. A great leader is often a good debater. Debate highlights the depth of reading, arrangement and presentation of the students.

Extempore Competition : Solo Singing

Essay Writing

An essay is a concise and precise arrangement of logical arguments. The ability to write is crucial in most industries.

Shabad Kirtan

No program is complete without the full cooperation of the students, the teaching and non-teaching members. The union members made the function run smoothly. We believe such extra-curricular activities conducted in the college would steadily add more talent into this sector. With the world adopting more of digital technologies, we believe the students who competed in the fest would reach global audience soon. We extend our warm wishes to all the students who made it a memorable event.

Sports Day Programme (8th May 2022)

Hunting and gathering have been part and parcel of human evolution. One can also trace sports and games history with hunting and warfare. However, sports and games have evolved in modern times, keeping entertainment and overall well-being in the picture. Sports period used to be the period most children looked forward to in the day. However, as human beings age, sports and games take a back seat in their life. This has also been attributed to the declining health of the population. Team spirit and sportsmanship are becoming vital in every sector of the economy. Mata Sundri College for women (NCWEB) recently held Sports Day, which saw good participation from students. We believe these sports, games, and sportsmanship would help them mould their character and contribute to society along with improving physical and mental health.

Teaching and Non-Teaching staff Lemon Race

This was one of the most sought-after events of the day whereby the students gave their best timings in 100 meters. The race favoured the fastest.

Sack Race

Lemon Race

Leg Race

This is a team event that consists of two-member teams. Here the legs of adjacent individuals are tied, and they have to run a specific distance.

Relay Race

Relay race is a spectator sport whereby the spectator sees the coordination and thrust in the race. Each participant in the team gives their best, and the accumulated individual achievements help the team win. Thus, this sport also promotes team spirit.

No program is complete without the full cooperation of the students, the teaching, and non-teaching members.

Sport is mostly liked to the Olympics. The Olympic motto in Latin is "**Citius, Altius, Fortius - Communiter**" which translates in English as "**Faster, Higher, Stronger-Together**." This sports day has undoubtedly carried the motto of the Olympics in true letter and spirit. We congratulate all the prize winners and hope to see you all next year.

World Environment Day Webinar

Mata Sundri College recently held the 'World Environment Day' NCWEB Webinar on the 4th June 2022. The session's topic was 'Environment Conservation Strategies for Sustainable Development.' The introductory talk was given by Dr. Indu Madam, followed by Principal Dr. Harpreet Kaur Madam's address. The main speaker of the webinar was Dr. Uzma Madam.

Freshers Welcome & Cultural Programme

Mata Sundri College NCWEB centre recently held the Freshers Day & Cultural Programme on the 12th of June, 2022. It started with prayers by the students. Then, a lamp was lit near Mata Sundri's picture by the Principal, Dr Harpreet Kaur, TIC, Dr. Indu Kumari, former TIC Dr. Lokesh & Sandeep Kumar, followed by the felicitation of the principal and other dignitaries.

The cultural programme followed the inauguration. These programmes were a blend of traditional and modern dance forms like Gidda, Belly dance, among others. The participants enthralled the crowd through their mesmerizing performances.

Gidda Dance – The show started with an energetic Gidda dance. It is a folk dance of the Punjab region which is generally part of social functions and festivals. It is performed by women with traditional music and rhythmic movements. The energy, the pairing up of team members, the costumes, and the music of dhol created a festival-like atmosphere in the auditorium.

Rajasthani dance – The second performance was also a group performance. This performance was equally energetic and mesmerizing. Students' traditional dressing, musical instruments and sizzling performance made the dance stand out.

Solo Dance – Perfomance followed the Rajasthani dance. It was performed by first-year student Shruti (BA program). The student danced to the tune of Bollywood songs.

After this stunning performance, group dances followed that included **Bhangra, Western, Haryanvi, and Gujarati**. All of these group dances carried the best of traditional and modern features. Traditional instruments, costumes & makeup, and music were a sight to watch.

Solo dance performances by the students were also unique and lively. The belly dance performance by Ishita was one of the best dance events of the day.

There were other solo performances and open floor performances that included dance and reciting poems.

Miss Fresher Contest

The Miss Fresher Contest was the final event of the day. There were close to 19 contestants from 2020 & 2021 Batches. The event was like National / International events, that had a ramp walk and question round.

International Yoga Day Celebration

MSC NCWEB organised a Yoga session in college campus for students to mark the celebration of International Yoga Week. The session was conducted under the supervision of yoga expert Sh. Ajay Kumar Sonker, who has twelve years of experience of yoga practice and expertise and have taught yoga in institution of national repute. Yoga Guru performed and taught various different asanas like Tadasana, Vrikshasana, Bhujangasana, Ustrasana and many more. He also explained the benefits that could be derived from every asana. After an hour-long fruitful yoga session, the event was proceeded by students sharing their learnings and experience from the session.

Result May-June 2021

1st Position

Himanshi
(B.Com. (P) 1st Year)

Yamini Rawat
(BA Prog. 1st Year)

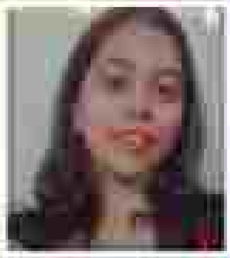

1st Position

Harshita Khurana
(B.Com. (P) 2nd Year)

Deepa Bhatt
(BA Prog. 2nd Year)

1st Position

Deeksha Sachdeva
(B.Com. (P) 3rd Year)

Gurleen Kaur
(BA Prog. 3rd Year)

These events often help boost the student's confidence, creating lasting memories from the college life and sometimes even helping them identify their career paths. We congratulate all the prize winners. A big thanks to all the participants and the audience.

'For the wise man, every day is a festival.'
Plutarch (Greek Platonist philosopher, essayist, historian, biographer)

MATA SUNDRI COLLEGE FOR WOMEN
NCWEB STUDY CENTRE
Mata Sundri Lane, New Delhi – 110002